अनादि-अनिधन
जिनागम पंथ जयवंत हो

प.पू. शुद्धोपयोगी संत सूरिगच्छाचार्य
श्री १०८ विरागसागर जी महामुनिराज

आचार्य विमर्श सागर विधान

श्रमण श्री विचिंत्य सागर जी

स्वर्णिम विमर्श उत्सव
15 नवम्बर 2022—23

रजत संयमोत्सव
14 दिसम्बर 2022—23

इस पंचमकाल में कर्म निर्जरा का ससक्त साधन है भक्ति। भक्ति से अनेकानेक अतिशयों की गौरव गाथा जिनागम में वर्णित है। उभय लोक संबंधी सभी प्रकार के दुःखों की समूल नाशक जिनभक्ति के अतिशय को प्राप्त आचार्य श्री पूज्यपाद स्वामी कृत 'शान्तिभक्ति' की सहज सिद्धि प्राप्त करनेवाले, देवों से पूजित, वर्तमान के भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज का वर्तमान आचार्य परम्परा में विशिष्ट स्थान है। नम्रीभूत देवों के द्वारा पूजित 'भावलिंगी संत' के रूप में आपकी पहिचान है।

तेरह-बीस आदि पंथों को जिनागम बाह्य निरुपित कर सामाजिक एकता के लिये अनादि-अनिधन जिनागम पंथ का उद्घोष करनेवाले आप सच्चे करुणावंत संत हैं। पूज्य आचार्य श्री की पुण्य प्रेरणा से भक्ति की यह सर्वमान्य और सर्वाधिक होनेवाली रचना शान्ति विधान का यह सुंदर प्रकाशन आप तक पहुँचाते हुये हमें अत्यंत प्रसन्नता है।

– प्रकाशक
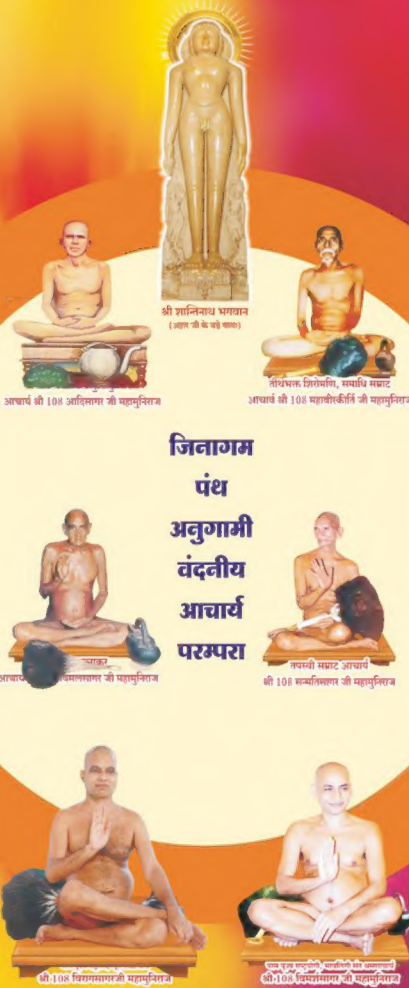
जिनागम पंथ अनुगामी वंदनीय आचार्य परम्परा

आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला : ग्रन्थांक - 24

आचार्य विमर्शसागर विधान

श्री विमर्श जागृति मंच प्रकाशन

परिचय की वीथिकाओं में

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

लौकिक यात्रा

पूर्व नाम	:	श्री राकेश कुमार जैन
पिता	:	पं. श्री सनत कुमार जैन (दो प्रतिमाधारी, समाधिस्थ)
माता	:	श्रीमती भगवती जैन (आपके ही कर कमलों से दीक्षित एवं समाधिस्थ पू. आर्यिका विहान्तश्री माताजी)
जन्म स्थान	:	जतारा, जिला-टीकमगढ़ (म.प्र.)
जन्म तिथि	:	मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी सं. 2030
जन्म दिनांक	:	15 नवम्बर, 1973 दिन : गुरुवार
शिक्षा	:	बी.एस.सी. (बायलॉजी)
भ्राता	:	दो (अग्रज राजेश जैन, अनुज चक्रेश जैन)
भगिनी	:	दो (अग्रजा-श्रीमती कमला जैन, अनुजा-बा.ब्र. महिमा दीदी (संघस्थ)
विवाह	:	बाल ब्रह्मचारी
खेल	:	बैडमिंटन, शतरंज (विशेषता-दोनों खेल जिनसे सीखे उन्हीं के साथ फाईनल खेलते हुए चैंपियन कप विजेता)
सामाजिक सेवा	:	मंत्री- श्री दिगम्बर जैन नवयुवक संघ, जतारा
रुचि	:	अध्ययन, संगीत, पेंटिंग
सांस्कृतिक रुचि	:	अनेक धार्मिक, सामाजिक नाट्य मंचन
करुणा भाव	:	बचपन में एक गरीब अंधे भिखारी को अक्सर पैसे दान देना।

परमार्थ यात्रा

आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज के प्रथम बार जतारा नगर में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं त्रयगजरथ महोत्सव में समाज की ओर से निवेदन के अवसर पर दर्शन हुये। आचार्यश्री की वात्सल्यता ने अत्यंत प्रभावित किया। (सन्-1995, स्थान-मोराजी सागर, म.प्र.)

त्याग के संस्कार : आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज की जतारा नगर में वैयावृत्ति के समय आजीवन आलू, प्याज एवं रात्रि भोजन के त्याग से गृह त्याग की भावना।

ब्रह्मचर्य व्रत: आचार्यश्री विरागसागर जी महाराज ससंघ का विहार कराते हुए सिद्धक्षेत्र श्री अहार जी में भगवान् शान्तिनाथ की चरणछाया में फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी, सोमवार संवत् 2051, दिनांक 27 फरवरी 1995 को आचार्यश्री से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया।

सामायिक प्रतिमा : आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज से पार्श्वनाथ मोक्ष सप्तमी के अवसर पर सामायिक प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। स्थान- क्षेत्रपाल जी ललितपुर (उ.प्र.), दिनांक 3 अगस्त 1995, गुरुवार।

ऐलक दीक्षा: फाल्गुन शुक्ला पंचमी, शुक्रवार, संवत् 2052, 23 फरवरी 1996 को देवेन्द्रनगर (पन्ना) में तपकल्याणक के दिन आचार्यश्री विरागसागरजी महाराज से ऐलक दीक्षा ग्रहण की और नाम पाया ऐलक विमर्शसागर जी।

मुनि दीक्षा : पौष कृष्णा 11, संवत् 2055, सोमवार दिनांक 14 दिसम्बर 1998 को अतिशय क्षेत्र बरासो (भिण्ड) में आचार्यश्री विरागसागरजी से मुनिदीक्षा ग्रहण की और मुनि विमर्शसागर नाम पाया।

आचार्य पद घोषित: आचार्यश्री विरागसागरजी ने 13 फरवरी 2005, रविवार को कुन्थुगिरी में गणधराचार्य श्री कुन्थुसागर जी सहित 14 आचार्य एवं 200 पिच्छिओं के मध्य आचार्य पद घोषित किया।

आचार्य पद संस्कार : मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी सं. 2067, रविवार, दिनांक 12 दिसम्बर 2010 को बांसवाड़ा (राजस्थान) में आचार्यश्री विरागसागरजी ने आचार्य पद के संस्कार किये और नाम दिया आचार्य विमर्शसागर जी।

शान्ति भक्ति की सिद्धि : 25 दिसम्बर 2015, सिद्धक्षेत्र अहार जी में भगवान् श्री शान्तिनाथ स्वामी के अतिशयकारी पादमूल में, संघस्थ बा.ब्र. विशु दीदी की असाध्य बीमारी (रोग) से करुणान्वित हो पूज्य गुरुदेव ने जब लगभग 1400 वर्ष प्राचीन आचार्य पूज्यपाद स्वामी रचित शान्त्यष्टक का भावपूर्वक पाठ किया तो देखते ही देखते क्षण मात्र में दीदी असाध्य रोग से मुक्त हो गईं। तब क्षेत्र के यक्ष-यक्षणियों द्वारा गुरुदेव की महापूजा की गई और सूचित किया कि आपको अपनी निर्मल साधना से इस पंचमकाल में दुर्लभतम शान्ति भक्ति की सहज ही सिद्धि प्राप्त हुई है। साथ ही पूज्य गुरुदेव को **'भावलिंगी संत', 'अहार जी के छोटे बाबा', 'शान्तिप्रभु के लघुनंदन'** आदि संज्ञायें प्रदान कीं।

शब्दालंकार : रत्नत्रय के ऊर्जस्वी और तेजस्वी अलंकारों से जिनकी आत्मा का एक-एक प्रदेश अलंकृत है। सत्यम्-शिवम्-सुंदरम् की दिव्य रश्मियों से आलोकित पूज्य गुरुवर विमर्शसागर जी महामुनिराज का विराट व्यक्तित्व किन्हीं शब्दालंकारों का मोहताज नहीं है। फिर भी जगह-जगह की धर्मप्राण-समाजों, ऊर्जस्वी संगठनों एवं यशस्वी व्यक्तियों ने नाना अवसरों पर अपने मनोभावों को शब्दों में समेट कर गुरुचरणों में कई शब्दालंकार प्रस्तुत किये हैं और अपना सौभाग्य माना है।

वात्सल्य शिरोमणि—संत के जीवन का सबसे प्रभावी गुण होता है उसका अकृत्रिम वात्सल्य भाव, पूज्य गुरुवर को यह वात्सल्य की अमूल्य सम्पदा, गुरु परम्परा से विरासत में ही प्राप्त हुई है, वर्षायोग 2008 के उपरान्त उत्तरप्रदेश के आगरा नगर में पंचकल्याणक के अवसर पर आगरा समाज ने आपके वात्सल्य से प्रभावित होकर आपको "**वात्सल्य शिरोमणि**" के अलंकार से विभूषित किया।

श्रमण गौरव—प.पू. भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज की अनुशासन के सुडौल साँचे में ढली निर्दोष श्रमण चर्या वर्तमान में श्रमण जगत को गौरवान्वित करती है, पूज्य श्री की आगमानुसारी चर्या से प्रभावित होकर एटा-2009 वर्षायोग में शाकाहार परिषद ने आपको "**श्रमण गौरव**" की उपाधि से अलंकृत किया और अपना सौभाग्य बढ़ाया।

वात्सल्य सिन्धु—वात्सल्य और करुणा के दो पावन तटों के बीच प्रवाहित गुरुवर की जीवन मंदाकिनी जनमानस की सतह पर बिखरी घृणा, बैर, कटुता की कलुषता को सहज ही धो डालती है। पूज्यश्री के इसी गुण आकर्षण से अनुग्रहीत हो, एटा वर्षायोग-2009 में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के अवसर पर राजेश जैन गीतकार आदि कवि समूह ने गुरुवर को "**वात्सल्य सिन्धु**" का भाव वंदन अर्पित कर सौभाग्य माना।

आचार्य पुंगव—संतवाद, पंथवाद, जातिवाद और ग्रंथवाद की वैचारिक संकीर्णताओं से असम्पृक्त पूज्य श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज की सिर्फ चर्या ही अनुकरणीय नहीं, अपितु उनका चतुरानुयोग का निर्मल ज्ञान भी ज्येष्ठ है। ऐसे ज्ञान और चर्या में श्रेष्ठ संत के महिमावंत व्यक्तित्व से प्रभावित होकर पूज्य गुरुदेव की गृहनगरी जतारा जैन समाज ने पंचकल्याणक 2012 के अवसर पर आपको "**आचार्य पुंगव**" की उपाधि से भूषित कर अपना मान बढ़ाया।

राष्ट्रयोगी—पूज्य गुरुवर का "**वैचारिक वैभव**" सिर्फ जैनों तक सीमित नहीं अपितु हर जाति का व्यक्ति उसे अपनी विरासत मानता है। अत: बिजयनगर (राज.) वर्षायोग-2012 में राष्ट्रवादी संस्था भारत विकास परिषद द्वारा आयोजित "दिव्य संस्कार प्रवचन माला" में आपके राष्ट्रोन्नति से समृद्ध उपदेशों को सुनकर आपको "**राष्ट्रयोगी**" का अलंकार समर्पित किया गया।

सर्वोदयी संत—पूज्य आचार्यश्री की निर्भीक शैली जनमानस को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती है तभी तो पूज्यवर के प्रवचनों में जैनों के साथ-साथ अजैन भी देशना को सुनकर आनंदित होते हैं, आपके उपदेशों में प्राणीमात्र के उदय की दिव्य चमक नजर आती है, तभी तो बिजयनगर (राज.) दिगम्बर जैन समाज ने 2012 वर्षायोग में आपको "**सर्वोदयी संत**" की उपाधि से नवाजा।

प्रज्ञामनीषी—श्रुताराधना के अनुपम आराधक, जिनेन्द्रवाणी के गहन प्रचारक, वाणी और कलम के अनूठे जादूगर पूज्यश्री की तीक्ष्ण प्रज्ञा और निर्मल ज्ञान से प्रभावित होकर, अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन बिजयनगर (राज.)- 2012 में कविगण एवं भारत विकास परिषद द्वारा आपको "**प्रज्ञामनीषी**" की उपाधि से विभूषित किया गया।

राष्ट्रहितैषी—उत्तरप्रदेश के एटा नगर में स्वामी विवेकानन्द की 150वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के तत्त्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय युवा सम्मेलन में पूज्य गुरुदेव के राष्ट्रहित में समर्पित देशोन्नति परक अमूल्य चिंतन से प्रभावित हो विश्व हिन्दू परिषद द्वारा सन् 2013 में आपको "**राष्ट्रहितैषी**" अलंकरण से अलंकृत किया गया।

आदर्श महाकवि—सम्प्रतिकाल में कुरल शैली का सैकड़ों विषयों को हृदयंगम करनेवाला अमर महाकाव्य "जीवन है पानी की बूँद" के शब्दशिल्पी, भजन, ग़ज़ल, मुक्तक, कविता, नई कविता, पद्यानुवाद, सवैया आदि अनेक जटिल विधाओं पर साधिकार कलम चलानेवाले परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज के अपूर्व काव्यात्मक अवदान से प्रेरित हो, 14 नवम्बर 2016 को अखिल भारतीय आध्यात्मिक कवि सम्मेलन में, देश के ख्यातिलब्ध मूर्धन्य कवियों ने सुरेश 'पराग' के नेतृत्व में एवं पं. संकेत जी के मार्गदर्शन में सकल जैन समाज देवेन्द्रनगर की गरिमामयी अनुमोदना के संग पूज्यश्री को "**आदर्श महाकवि**" का अलंकरण भेंट कर निज सौभाग्य वर्धन किया।

चारित्र रथी-आत्मप्रदेशों में सच्चे भावलिंग की प्रतिष्ठा कर, आत्मरति और परविरति के साथ चारित्र रथ पर सवार हो पूज्य गुरुदेव आत्मोत्थान के सुपथ पर अबाध रीति से वर्धमान हैं। आपकी इस आत्मोन्नयन की निष्पंक चारित्र साधना से प्रभावित हो देश के वरिष्ठ साहित्यकार श्री सुरेश 'सरल' जी ने बिजयनगर चातुर्मास 2012 में आपको "**चारित्र रथी**" का अलंकरण भेंट कर स्व गौरववर्धन किया।

जिनागम पंथ प्रवर्तक –वर्तमान में पंथवाद, संतवाद और जातिवाद के नाम पर बिखरती दिगम्बर जैन समाज में अनादि अनिधन "**जिनागम पंथ**" का उद्घोष कर पूज्य गुरुदेव ने जैन एकता के लिये एक महनीय कार्य किया है। पूज्य गुरुदेव के इस "**जैन यूनिटी मिशन**" से प्रभावित हो सन् 2020 में श्री कल्पद्रुम महामण्डल विधान एवं गजरथ महोत्सव के सुप्रसंग पर बा.ब्र. ऋषभ भैया (नागपुर) के मार्गदर्शन में सकल दिगम्बर जैन समाज, बाराबंकी ने आपको "**जिनागम पंथ प्रवर्तक**" का अलंकरण भेंट कर आपके इस अभिनंद्य प्रयास की अभ्यर्थना की।

राष्ट्रगौरव–परम पूज्य भावलिंगी संत राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज का अनुत्तम वैदुष्य जहाँ एक ओर धर्मनीति की प्रतिष्ठा करता है वहीं दूसरी ओर आपका क्रान्तिनिष्ठ मौलिक चिंतन, राजनीति, न्याय-नीति, मानव सेवा, शाकाहार, गौरक्षा, लोकतंत्र, पारिवारिक एवं सामाजिक दायित्वों के प्रति जन जागरण कर संपूर्ण देश के लिये गौरव का विषय बन पड़ा है। पूज्य गुरूदेव के दिव्यावदानों से आज समुचा देश गौरवान्वित है। इसीलिये महमूदाबाद चातुर्मास 2021 में सम्पूर्ण अवध प्रान्त की जैन समाज की गरिमामयी उपस्थिति में कला और साहित्य की अखिल भारतीय संस्था एवं "**राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ**" के अनुसांगिक संगठन "**संस्कार भारती**" की ओर से माननीय श्री गिरीशचन्द्र मिश्र, राज्यमंत्री, उत्तरप्रदेश शासन द्वारा पूज्य गुरुदेव को "**राष्ट्रगौरव**" का अलंकरण भेंट किया गया।

साहित्यिक यात्रा

भावलिंग संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज सौम्यवदन, गौरवर्ण, शुभ संस्थान, चौड़ा ललाट, दमकता मुखमण्डल, प्रशस्त मुद्रा, मधुर मुस्कान के धारी हैं, ऐसे ही आचार्यश्री की लेखनी भी जनमानस के हृदय को छूने वाली है। आचार्यश्री ने अनेक विषयों पर कलम चलाते हुए साहित्य सृजन किया है।

काव्य पाठ संग्रह –

1. हे वन्दनीय गुरुवर (काव्य)
2. मानतुंग के मोती
3. विमर्शाञ्जलि (पूजा पाठ संग्रह)
4. गीताञ्जलि (भजन)
5. विरागाञ्जलि (श्रमण पाठ संग्रह)
6. जीवन है पानी की बूँद (भाग-1)
7. जीवन है पानी की बूँद (भाग-2)
8. जीवन है पानी की बूँद (समग्र)
9. जीवन चलती हुई घड़ी (काव्य)
10. खूबसूरत लाइनें (काव्य)
11. समर्पण के स्वर (काव्य)
12. आईना (काव्य)
13. सोचता हूँ कभी-कभी (काव्य)
14. मेरा प्रेम स्वीकार करो (काव्य)
15. वाह क्या खूब कही (काव्य)
16. कर लो गुरु गुणगान (काव्य)
17. आओ सीखें जिनस्तोत्र
18. चटपटे प्रश्न-स्वादिष्ट उत्तर (पहेली)

प्रवचन साहित्य :

1. रयणोदय (प्रथम भाग)
2. रयणोदय (द्वितीय भाग)
3. रयणोदय (तृतीय भाग)
4. रयणोदय (चतुर्थ भाग)
5. रयणोदय (पंचम भाग)
6. योगोदय (प्रथम भाग)
7. योगोदय (द्वितीय भाग)
8. उपासकोदय (प्रथम भाग)
9. उपासकोदय (द्वितीय भाग)
10. देशव्रतोदय
11. साम्योदय (प्रथम भाग)
12. साम्योदय (द्वितीय भाग)
13. रत्नोदय (प्रथम भाग)
14. ज्ञानोदय
15. इष्टोदय (प्रथम भाग)
16. इष्टोदय (द्वितीय भाग)
17. गूँगी चीख
18. भरत जी घर में वैरागी
19. शब्द शब्द अमृत
20. शंका की एक रात

प्रेरक साहित्य :

1. जनवरी विमर्श
2. जैन श्रावक और दीपावली पर्व
3. विमर्श हस्ताक्षर

ग़ज़ल संग्रह :

ज़ाहिद की ग़ज़लें

विधान :

1. आचार्य विरागसागर विधान
2. एकीभाव विधान
3. श्री भक्तामर विधान (3)
4. विषापहार विधान
5. श्री कल्याण मंदिर विधान
6. श्री श्रमण उपसर्ग निवारण विधान

चालीसा : गणधर चालीसा

टीका :

योगसार प्राभृत ग्रंथ पर :

1. अप्पोदया (प्राकृत टीका)
2. आत्मोदया (हिन्दी टीका)

महाकाव्य :

"**जीवन है पानी की बूँद**" **(महाकाव्य)**– पूज्य गुरुदेव इस अमर महाकाव्य के मूल रचयिता है। पूज्यश्री के इस बहुचर्चित महाकाव्य पर अनेकों साधु-भगवंत, विद्वान् एवं संगीतकार बहुसंख्या में नवीन छंदों का सृजन कर अपनी काव्य प्रतिभा को धन्य कर रहे हैं, जो इस महाकाव्य की लोकप्रियता का अनुपम उदाहरण है।

लिपि : विमर्श लिपि, विमर्श अंक लिपि

भाषा : विमर्श एम्बिसा

पद्यानुवाद :

1. सुप्रभात स्तोत्र
2. महावीराष्टक स्तोत्र
3. लघु स्वयंभू स्तोत्र
4. भक्तामर स्तोत्र (त्रय पद्यानुवाद)
5. गोम्मटेस स्तुति
6. द्वात्रिंशतिका (सामायिक पाठ)
7. विषापहार स्तोत्र
8. एकीभाव स्तोत्र
9. पञ्चमहागुरुभक्ति
10. तीर्थंकर जिनस्तुति
11. गणधरवलय स्तोत्र
12. कल्याणमंदिर स्तोत्र
13. परमानंद स्तोत्र
14. रयणसार
15. योगसार
16. उपासक संस्कार
17. देशव्रतोद्योतन
18. ज्ञानांकुश

बहुचर्चित भजन :

1. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)
2. कर तू प्रभु का ध्यान
3. ऋण मुक्ति का वर दीजिये
4. शान्तिनाथ कीर्तन
5. देश और धर्म के लिये जिओ
6. माँ

प्रेरणा से प्रकाशन :

1. सिर्फ दो प्रवचन (आचार्य विरागसागरजी, सम्पादक-आचार्य विमर्शसागर जी)
2. हिन्दी साहित्य की सन्त परम्परा में आचार्य विरागसागर के कृतित्त्व का अनुशीलन (डॉ. लोकेश खरे)
3. समसामयिक – आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा)
4. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय – राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी)
5. प्रज्ञाशील महामनीषी

प्रेरणा से स्थापित :

- **आचार्य विरागसागर ग्रंथमाला**
- **जिनागम पंथ ग्रंथमाला**

उद्देश्य : मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन
प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी धार्मिक, नैतिक साहित्य का निर्माण, प्रकाशन

विद्वत् संगोष्ठी :

1. समसामयिक –आचार विद्वत् संगोष्ठी (कोटा-2006)
2. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (शिवपुरी-2007)
3. जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ौत-2014)
4. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (बड़ा मलहरा-2016)
5. जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य) राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (देवेन्द्रनगर-2016)
6. समसामयिक राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (जबलपुर-2017)
7. आचार्यश्री विमर्शसागरजी कृत 'रयणोदय' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी एवं जैन पत्रकार, संपादक सम्मेलन (छिंदवाड़ा -2018)।
8. आचार्यश्री विमर्शसागरजी कृत 'ज़ाहिद की ग़ज़लें' कृति पर साहित्यकार सम्मेलन (छिंदवाड़ा-2018)
9. आचार्यश्री विमर्शसागर जी कृत 'रयणोदय' पर राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी (दुर्ग-2019)।

आनन्द महोत्सव (पूजन प्रशिक्षण शिविर) – आचार्यश्री के सानिध्य एवं निर्देशन में आयोजित 'आनन्द महोत्सव' एक ऐसी प्रयोगशाला है जिसमें जैनधर्म के संस्कार एवं शिक्षा का प्रयोग करना सिखाया जाता है। यदि चेतनतीर्थ स्वरूप उपासक संस्कारित नहीं, तो अचेतनतीर्थ स्वरूप जिनमंदिरों का महत्व नहीं जाना जा सकता। आचार्यश्री जब अपने मधुर कंठ से शिविर का यथायोग्य संचालन करते हैं तब हर श्रावक भक्ति में ऐसा लीन हो जाता है कि 4-5 घंटे का भी पता नहीं चलता। आचार्यश्री के निर्देशन में आयोजित इस शिविर के माध्यम से आज हजारों लोग जैनत्व के संस्कारों से जुड़े हैं। अभी तक 24 पूजन शिविर आयोजित हो चुके हैं–

1. महरौनी (उ.प्र.)
2. वरायठा (म.प्र.)
3. अंकुर कॉलोनी, सागर (म.प्र.)
4. सतना (म.प्र.)
5. अशोकनगर (म.प्र.)
6. रामगंजमण्डी (राज.)
7. भानपुरा (म.प्र.)
8. सिंगोली (म.प्र.)
9. कोटा (राज.)
10. शिवपुरी (म.प्र.)
11. आगरा (उ.प्र.)
12. एटा (उ.प्र.)
13. डूंगरपुर (राज.)
14. अशोकनगर (म.प्र.)
15. बिजयनगर (राज.)
16. भिण्ड (म.प्र.)
17. बड़ौत (उ.प्र.)
18. टीकमगढ़ (म.प्र.)
19. देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
20. जबलपुर (म.प्र.)
21. लखनादौन (म.प्र.)
22. छिंदवाड़ा (म.प्र.)
23. दुर्ग (छत्तीसगढ़)
24. फतेहपुर (उ.प्र.)

पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव :

1. नेमिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2002 (रजवांस, सागर, म.प्र.)
2. आदिनाथ पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव-2003 (महरौनी, ललितपुर, उ.प्र.)
3. आदिनाथ पंचकल्याणक, रथ महोत्सव-2004 (बूँदी, राज.)
4. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2007 (रामगंजमण्डी, कोटा ,राज.)
5. पार्श्वनाथ पंचकल्याणक, रथोत्सव-2007 (कोटा, राज.)
6. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2008 (शिवपुरी, म.प्र.)
7. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2009 (आगरा, उ.प्र.)
8. आदिनाथ पंचकल्याणक, गजरथ महोत्सव-2010 (एटा, उ.प्र.)
9. आदिनाथ पंचकल्याणक, त्रय गजरथ महोत्सव-2012 (जतारा, म.प्र.)
10. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव-2013 (तीर्थधाम आदीश्वरम् चंदेरी, म.प्र.)
11. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (पृथ्वीपुर, म.प्र.)
12. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2015 (टीकमगढ़, म.प्र.)
13. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, त्रय गजरथ महोत्सव-2015 (बैरवार, जतारा, म.प्र.)
14. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, गजरथ महोत्सव-2018 (धनौरा, म.प्र.)
15. आदिनाथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, रथ महोत्सव-2021 (महमूदाबाद उ.प्र.)

चातुर्मास :

1.	मढ़ियाजी जबलपुर (म.प्र.)	– 1996
2.	भिण्ड (म.प्र.)	– 1997
3.	भिण्ड (म.प्र.)	– 1998
4.	भिण्ड (म.प्र.)	– 1999
5.	महरौनी (उ.प्र.)	– 2000
6.	अंकुर कॉलोनी (सागर, म.प्र.)	– 2001
7.	सतना (म.प्र.)	– 2002
8.	अशोकनगर (म.प्र.)	– 2003
9.	रामगंजमण्डी (राज.)	– 2004
10.	सिंगोली (म.प्र.)	– 2005
11.	कोटा (राज.)	– 2006
12.	शिवपुरी (म.प्र.)	– 2007
13.	आगरा (उ.प्र.)	– 2008
14.	एटा (उ.प्र.)	– 2009
15.	डूंगरपुर (राज.)	– 2010

16. अशोकनगर (म.प्र.) — 2011
17. बिजयनगर (राज.) — 2012
18. भिण्ड (म.प्र.) — 2013
19. बड़ौत (उ.प्र.) — 2014
20. टीकमगढ़ (म.प्र.) — 2015
21. देवेन्द्रनगर (म.प्र.) — 2016
22. जबलपुर (म.प्र.) — 2017
23. छिंदवाड़ा (म.प्र.) — 2018
24. दुर्ग (छत्तीसगढ़) — 2019
25. बाराबंकी (उ.प्र.) — 2020
26. महमूदाबाद (उ.प्र.) — 2021

वर्तमान संत संस्था में आचार्यश्री विमर्शसागर जी महाराज एक ऐसे श्रेष्ठ संत हैं जिनके पास ज्ञान संस्कार की चर्या एवं चर्चा देखने-सुनने को मिलती है। कम बोलना लेकिन काम का बोलना आचार्यश्री की अपनी विशिष्ट शैली है। प्रवचनों में सकारात्मक चिंतन को परोसने वाले हित-मित प्रियभाषी, ''जिनागम पंथ प्रवर्तक'' आचार्यश्री पंथवाद-संतवाद-जातिवाद की भी खूब खबर लेते हैं। सच्चे संतत्व को प्रकाशित करनेवाले आचार्यश्री कहते हैं, पंथ-संत-जातिवाद को बढ़ावा देनेवाले श्रमण एवं श्रावक जिनधर्म के विनाशक होंगे। आचार्यों की अपनी-अपनी आचार परम्परा से श्रावक साधुओं के प्रति अश्रद्धानी होंगे, साथ ही सामाजिक समरसता, एकता नष्ट होगी। सचमुच आचार्यश्री का चिन्तन भविष्य की व्याख्या कर रहा है। आचार्यश्री का सरल-सौम्य व्यक्तित्त्व एवं पूर्वापर चिंतन ही आचार्यश्री की अलग पहचान है। ऐसे युगचेता संत के चरणों में हम बारम्बार नमन करते हैं।

–श्रमण विचिन्त्यसागर (संघस्थ)

पूज्य गुरुदेव से संबंधित अन्य साहित्य

जीवनी साहित्य :

1. राष्ट्रयोगी : लेखक–श्री सुरेश 'सरल' जबलपुर (म.प्र.)
2. आँगन की तुलसी : लेखक–प्राचार्य श्री निहाल चन्द जैन, बीना (म.प्र.)
3. जतारा का ध्रुवतारा : लेखक–श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
4. भावलिंगी संत (महाकाव्य) : लेखक–श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
5. विमर्श धाम (महाकाव्य) : लेखक–पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र)
6. सर्वोदयी संत (महाकाव्य) : लेखक–श्री ज्ञानचन्द जैन 'दाऊ', सागर (म.प्र.)
7. विमर्श महाभाष्य : लेखक–पं. संकेत जैन 'विवेक', देवेन्द्रनगर (म.प्र.)
8. विमर्श वाटिका : लेखक–श्री कपूर चंद जैन 'बंसल', जतारा (म.प्र.)
9. विमर्श भक्ति शतक : लेखिका–श्रीमती स्मृति जैन 'भारत', अशोकनगर (म.प्र.)
10. विमर्श शतक 1, 2 : लेखक–पं. ब्रजेन्द्र जैन, देवेन्द्र नगर (म.प्र.)
11. विमर्श वंदना : लेखक–कवि शशिकर 'खटका', राजस्थानी, बिजयनगर (राज.)
12. विमर्स्स महाकव्वं : लेखक-डॉ. उदयचन्द्र जैन उदयपुर (राज.)

विधान :

1. आचार्य विमर्शसागर विधान : लेखक–श्रमण विचिन्त्यसागर मुनि (संघस्थ)
2. संकट मोचन तारणहारे-गुरु विमर्श विधान : लेखक–पं. संकेत जैन 'विवेक' देवेन्द्रनगर (म.प्र.)

स्मारिकायें :

1. विमर्श वारिधि (बिजयनगर चातुर्मास 2012, स्मारिका)
2. विमर्श प्रवाह (बड़ौत चातुर्मास 2014, स्मारिका)
3. विमर्श गीतिका (टीकमगढ़ चातुर्मास 2015, स्मारिका)
4. विमर्शानुभूति (देवेन्द्रनगर चातुर्मास 2016, स्मारिका)
5. विमर्श वात्सल्य (जबलपुर चातुर्मास 2017, स्मारिका)
6. विमर्श प्रभा (छिंदवाड़ा चातुर्मास 2018, स्मारिका)

मासिक पत्रिका :

विमर्श प्रवाह (मासिक)
प्रधान संपादक–डॉ. श्रेयांसकुमार जैन (बड़ौत)
संपादिका–डॉ. अल्पना जैन (ग्वालियर)
प्रबंध संपादक–डॉ. विश्वजीत जैन (आगरा)
संपादक–पं. सर्वेश शास्त्री, पं. संकेत जैन 'विवेक'

बहुचर्चित 'जीवन है पानी की बूँद' (महाकाव्य) का उद्भव मूल रचयिता की कलम से...

बात 1997 भिण्ड चातुर्मास की है–

सूरज गुनगुनी धूप लेकर क्षितिज पर चमकने लगा। परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज अपने विशाल संघ के साथ प्रभातकालीन आवश्यक भक्ति क्रिया से निवृत्त हो चुके थे। प्रतिदिन की भाँति परम पूज्य गुरुदेव अपने विशाल संघ के साथ नित्य क्रिया हेतु नसियाँ जी की ओर बढ़ते जा रहे थे।

पूज्य गुरुदेव के साथ मैं भी यथाक्रम ईर्यासमिति से चल रहा था, और काव्य में रुचि होने के कारण चिंतन को आध्यात्मिक अनुभूतियों से स्नान करा रहा था। तभी अचानक चिंतन की गर्भस्थली में एक पंक्ति 'जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे' का प्रसव हुआ, और मैं इस प्रसव की परमानंद अनुभूति का बारम्बार अनुभव करता हुआ स्मृति के दिव्य द्वार तक पहुँच गया। मैंने कभी 'होनी–अनहोनी' सीरियल देखा था, अत: होनी–अनहोनी शब्द को अपने काव्य में स्थान देने का विचार करता था, तभी अचानक नित्य क्रिया से लौटते समय चिंतन की गर्भस्थली से जुड़वाँ पंक्ति 'होनी–अनहोनी, हो–हो–2 कब क्या घट जाये रे' का प्रसव हुआ। मैं दोनों जुड़वाँ पंक्तियों का अनुभव करता हुआ, अंतरंग में गुरु आशीष की श्रद्धा से भर गया। अत: इस आध्यात्मिक भजन को पूर्ण करने में उपयोग लगाया। भजन की पूर्णता होते ही मैं पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में पहुँचा, और विनयपूर्वक अपना चिंतन मधुर स्वर में गुरु चरणों में समर्पित किया। सच कहूँ, गुरुदेव ने अत्यंत आह्लाद से भरकर मुझे शुभाशीष दिया। गुरु का वह मंगल आशीष ही है कि इस आध्यात्मिक भजन ने सभी के कंठ को स्पर्शित किया, और इस समय का बहुचर्चित भजन कहलाया। जैन हों या अजैन सभी ने इसे समभाव से स्वीकारा, और मुझे अत्यंत श्रद्धा और प्यार से 'जीवन है पानी की बूँद' चिंतन के प्रणेता, इस नाम से पुकारने लगे।

यद्यपि इस भजन को जब अन्य साधु, विद्वान्, गीतकार, गायक, अपनी प्रशंसा के लिए अपनी रचना कहकर बोलने लगे, तब पूज्य गुरुदेव को यह कहना पड़ा, कि 'जीवन है पानी की बूँद' भजन तो विमर्शसागर जी की मूल गाथाएँ है जिस पर अन्य साधु, विद्वान्, गायक तो मात्र टीकायें लिख रहे हैं।

–श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जीवन है पानी की बूँद (महाकाव्य)

मूल रचयिता : भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

जीवन है पानी की बूँद, कब मिट जाये रे–ऽऽ
होनी–अनहोनी, हो–हो–2–कब क्या घट जाये रे ऽऽ

साथ निभायेगा बेटा, सोच रहा लेटा–लेटा।
हाय बुढ़ापा आयेगा, पास न आयेगा बेटा।
ख्वाबों में तू क्यों, हो–हो–2 आनन्द मनाये रे ऽऽ

अर्द्धमृतकसम वृद्धापन, झुकी कमर सिकुड़न–सिकुड़न।
गोदी में पोता–पोती, खोज रहा बचपन यौवन।
बीते जीवन के, हो–हो–2 तू गीत सुनाये रे ऽऽ

हाथों में लकड़ी थामी, चाल हो गई मस्तानी।
यम के घर खुद जाने की, जैसे मन में हो ठानी।
बेटा बहु सोचें, हो हो–2 डोकरो कब मर जाये रे ऽऽ

चारपाई पर लेटा है, पास न बेटी–बेटा है।
चिल्लाता है पानी दो, कोई न पानी देता है।
भूखा प्यासा ही, हो–हो–2 इक दिन मर जाये रे ऽऽ

जीवन बीता अरहट में, पुण्य–पाप की करवट में।
चढ़कर अर्थी पर जाये, अन्त समय भी मरघट में।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तेरा कफन सजाये रे ऽऽ

सिर पर जिसे बिठाया है, गोदी में भी खिलाया है।
लाड़ प्यार से पाला है, सुख की नींद सुलाया है।
तेरा ही बेटा, हो–हो–2 तुझे आग लगाये रे ऽऽ

जिसके लिए कमाता है, जीवन साथी बताता है।
जिसकी चिन्ता कर करके, अपना चैन गँवाता है।
देहरी से बाहर, हो–हो–2 वो साथ न जाये रे ऽऽ

ऋण मुक्ति का वर दीजिये

रचयिता : भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

गुरुदेव मेरे आप बस, इतनी कृपा कर दीजिए।
कल्याण अपना कर सकूँ, वरदान इतना दीजिए।।

सोचूँ सदा अपना सुहित, नहिं काम क्रोध विकार हो।
हे नाथ ! गुरु आदेश का, पालन सदा स्वीकार हो।
सिर पर मेरे आशीष का, शुभ हाथ प्रभु धर दीजिए। गुरुदेव...

दृढ़ शील संयम व्रत धरूँ, नित ब्रह्मचर्य लखूँ सदा।
सीता सुदर्शन सम बनूँ, निज आत्मसौख्य चखूँ सदा।
माता सुता बहिना पिता, दृष्टि विमल कर दीजिए। गुरुदेव...

सच्चा समर्पण भाव हो, नहिं स्वार्थ की दुर्गन्ध हो।
विश्वासघात ना हम करें, हर श्वाँस में सौगंध हो।
हे नाथ! गुरु विश्वास की, डोरी अमर कर दीजिए। गुरुदेव...

जागे न मन में वासना, मन में कषायें न जगें।
हो वात्सल्य हृदय सदा, कर्त्तव्य से न कभी डिगें।
गुरुभक्ति की सरिता बहे, निर्मल हृदय कर दीजिए। गुरुदेव...

भावों में निश्छलता रहे, छल की रहे न भावना।
गुरु पादमूल शरण मिले, करते हैं हम नित कामना।
जिनधर्म जिनआज्ञा सुगुरु, सेवा का अवसर दीजिए। गुरुदेव...

उपकार जो मुझ पर किये, गुरुवर भुला न पायेंगे।
जब तक है तन में श्वाँस हम, उपकार गुरु के गायेंगे।
हम शिष्य हैं गुरु के ऋणी, ऋणमुक्ति का वर दीजिए। गुरुदेव...

सम्यक्त्व ज्ञान चरित्र से, सुरभित रहे मम साधना।
आचार की मर्यादा ही, हे नाथ ! हो आराधना।
स्वर-स्वर समाधिभाव का, चिंतन मुखर कर दीजिए। गुरुदेव...

कर तू प्रभु का ध्यान

रचयिता : भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

कर तू प्रभु का ध्यान-बाबा, कर तू प्रभु का ध्यान।
निज घट में भगवान-बाबा, निज घट में भगवान।।

काँटों में भी जीवन तेरा, फूलों सा खिल जायेगा।
खोज रहा है जिसको तू वह, पलभर में मिल जायेगा।
खुद को तू पहिचान-बाबा, खुद को तू पहिचान।।1।।

धन-वैभव यह महल-खजाना, कुछ भी साथ न जायेगा।
सुबह खिला जो फूल बाग में, साँझ समय मुरझायेगा।
कर ले धर्मध्यान-बाबा, कर ले धर्मध्यान।।2।।

कभी किसी का दिल दुःख जाये, ऐसे बोल कभी मत बोल।
घावों पर मल्हम बन जायें, ऐसे बोल बड़े अनमोल।
कहलाता यह ज्ञान-बाबा, कहलाता यह ज्ञान।।3।।

माता-पिता, बड़ों का आदर, धर्ममार्ग पर चलो सदा।
गुरुजन की नित सेवा करना, श्रावक का कर्तव्य कहा।
पाओगे सम्मान-बाबा, पाओगे सम्मान।।4।।

हिंसा, झूठ, कुशील, परिग्रह, चोरी यह मत पाप करो।
पाप विनाशक, धर्म प्रकाशक, णमोकार का जाप करो।
हो सम्यक् श्रद्धान-बाबा, हो सम्यक् श्रद्धान।।5।।

राग-द्वेष भावों के कारण, भवसागर में डूब रहा।
गँवा रहा भोगों में जीवन, मन फिर भी न ऊब रहा।
क्यों बनता नादान-बाबा, क्यों बनता नादान।।6।।

जिसको अपना कहा आज तक, हुआ कभी ना वह अपना।
जिसकी खातिर जिया आज तक, निकला वह सुंदर सपना।।
क्यों तू करे गुमान-बाबा, क्यों तू करे गुमान।।7।।

मेंढक ने प्रभु ध्यान किया जब, मरकर देव हुआ तत्काल।
समवसरण में प्रभु को ध्याया, जीवन उसका हुआ निहाल।
मिट जाये अज्ञान-बाबा, मिट जाये अज्ञान।।8।।

''माँ''–एक सुखद अनुभूति का एहसास

रचयिता : भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

बेटा हो दु:ख–पीड़ा में, माँ बन जाती दीवार।
माँ के प्यार सा इस दुनियाँ में नहीं किसी का प्यार।।
ओ–ऽऽ माँ, प्यारी माँ–2

माँ की गोदी में बेटा जब चैन से सोता है।
बेटा जैसा और किसी का पुण्य न होता है।
किलकारी भर-भरकर माँ का करता है दीदार।
माँ के प्यार सा.....

बेटा जब–जब रोता है, माँ लोरी गाती है।
भूखी–प्यासी रहकर भी माँ, दूध पिलाती है।
चंदा–सूरज, अश्रु बहाते, पाने माँ का प्यार।
माँ के प्यार सा.....

कोठी–बँगला रुपया–पैसा, सब ऐशो–आराम।
माँ बिन सूना घर का आँगन, माँ को करो प्रणाम।
माँ ही घर की तुलसी है, रौनक, घर का शृंगार।
माँ के प्यार सा.....

जीवन–संगिनी पाकर माँ का प्यार भुलायेगा।
घर में दीवाली होगी पर खुशी न पायेगा।
माँ ही घर की दीवाली, होली, घर का त्यौहार।
माँ के प्यार सा.....

अपनी खुशियाँ कर न्यौछावर, देती है खुशियाँ।
बेटा समझे, न समझे, समझे न यह दुनियाँ।
माँ चलती काँटों पर, देती फूलों का उपहार।
माँ के प्यार सा.....

दुनिया छूट भी जाये, माँ का कभी न छूटे साथ।
माँ ने पकड़ा हाथ हमारा, पकड़ो माँ का हाथ।
सब तीरथ माँ चरणों में, बन जाओ श्रवण कुमार।
माँ के प्यार सा.....

राम, कृष्ण, महावीर ने माँ का मान बढ़ाया है।
जाँ देकर आजाद भगत ने, माँ को पाया है।
सदा चिरायु, सुखी रहो, भारत माँ करे पुकार।
माँ के प्यार सा.....

वर्तमान में जातिवाद–पंथवाद में बँटती हुई जैन समाज का ध्यान
आकर्षित करनेवाली और सम्यक् बोध प्रदान करनेवाली

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य
श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज द्वारा रचित पंक्तियाँ

(1)

तेरा और बीस पंथ, उलझे हैं श्रावक संत,
कोई तेरा कोई बीस करते बढ़ाई हैं।
करते हैं राग–द्वेष, जानें नहीं धर्म लेश,
मंदिरों में खींचतान करते लड़ाई हैं।।
कर रहे धर्म लोप, मानते हैं धर्म गोप,
एक दूसरे की अहंकार की चढ़ाई है।
तेरा–बीस के बयान, जैसे हिन्द–पाकिस्तान
हाय जैन एकता भी आज लड़खड़ाई है।।

(2)

कोई है बघेरवाल, कोई खण्डेलवाल,
कोई अग्रवाल तो कोई परवार है।
कोई–कोई जैसवाल, कोई–कोई ओसवाल,
कोई पोरवाल कोई गोल शृंगार है।।
बंद हुये बोलचाल, वाल की खड़ी दीवाल,
जातियों का भूत सबके ही सिर सवार है।
मंदिरों में अब जैन कहीं दिखते ही नहीं,
मंदिरों पे अब जातियों का अधिकार है।।

(3)

जातिमद चढ़ रहा, पंथभेद बढ़ रहा,
जहाँ देखो वहाँ राग–द्वेष की ही बात है।
महावीर हुये खण्डेलवाल, अग्रवाल,
आदि–आदि मंदिरों पे लिखा ये दिखात है।।
कहीं महावीर हुये तेरा पंथी, बीस पंथी,
धर्मात्माओं ने भी दी क्या सौगात है।
सोचा जब मैं भी महावीर को पहचान दूँ,
तो धरा महावीर रूप, मेरी क्या औकात है।।

शान्तिनाथ कीर्तन

रचयिता : भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, भगवन्–2
जय हो, जय हो, जय हो, जय हो, शान्ति भगवन्।

हम आये हैं – द्वार तुम्हारे–2
दे दो प्रभु जी – हमको सहारे–2
शान्तिनाथ भगवन्–भगवन्–भगवन्ऽऽ
जय हो.......

छवि वीतरागी–प्यारी प्यारी लागे–2
दरश जो पाया–धन्य भाग जागे–2
चरणों करूँ नमन–नमन–नमनऽऽ
जय हो.......

सर्वज्ञ स्वामी–शरण में आया–2,
कहीं न मिला जो–वह सुख पाया
हर्षित हुए नयन–नयन–नयनऽऽ
जय हो.......

हित उपदेशी–आप कहाते–2
हम गुण गाने–भक्त बन जाते–2
छोड़ूँ न अब चरण–चरण–चरणऽऽ
जय हो.......

अहार जी के – बाबा कहाते–2
यक्ष यक्षिणी भी–सिर को नवाते–2
झुकते हैं मुनिगण–मुनिगण–मुनिगणऽऽ
जय हो.......

दुखिया हो कोई–द्वार पे आये–2
हँसता हुआ ही–द्वार से जाये–2
श्रद्धा हो पावन–पावन–पावनऽऽ
जय हो.......

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ऐसे प्रथम दिगम्बराचार्य हैं, जिनकी यह रचना म.प्र. शिक्षा बोर्ड ने कक्षा ग्यारहवीं की पुस्तक 'मकरन्द' में शामिल की है।

देश और धर्म के लिये जिओ

देश और धर्म के लिए जिओ–2
हर कदम–कदम पे सबको ले
एकता अखण्डता की बात ले
शुभ–पवित्र लक्ष्य के लिए जिओ
देश............

मातृभूमि पर भी हमको गर्व हो
मातृभूमि रक्षा एक पर्व हो
ऐसे राष्ट्र पर्व के लिए जिओ
देश............

श्रम सभी का एक मूलमंत्र हो
श्रम के लिए हर मनुज स्वतंत्र हो
लोकलाज शर्म छोड़कर जिओ
देश............

हो अनाथ दुखिया अगर राह में
हो सहानुभूति हर निगाह में
करुणा और प्रेम के लिए जिओ
देश............

भाईचारा सबके दिल में हो सदा
कटुता घृणा बैरभाव हो विदा
जीना, श्रेष्ठ कर्म के लिए जिओ
देश............

प.पू. भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं, जिनके द्वारा नूतन लिपि का सृजन किया गया, जिसे 'विमर्श लिपि' की संज्ञा दी गई है।

विमर्श लिपि

	अ	आ	इ	ई	उ	ऊ
विमर्श लिपि (स्वर)						
विमर्श लिपि (स्वर मात्रा)	.	..	.	..	.	..

	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
विमर्श लिपि (स्वर)						
विमर्श लिपि (स्वर मात्रा)						

ऋ	ॠ	ऌ	ॡ

व्यंजन

क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
विमर्श लिपि					
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
विमर्श लिपि					
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
विमर्श लिपि					
		ड़ →		←	ढ़

त वर्ग	त	थ	द	ध	न
विमर्श लिपि					
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म
विमर्श लिपि					
अंतस्थ	य	र	ल	व	
विमर्श लिपि					
ऊष्माण	श	ष	स	ह	
विमर्श लिपि					
संयुक्त	क्ष	त्र	ज्ञ		
विमर्श लिपि					

विमर्श लिपि में शब्द के नीचे लाईन होती है।
चिन्ह भी लाईन पर ऊपर नीचे आगे-पीछे लगते हैं।
जैसे

राम जाता है	क्या राम जाता है?

शांति भक्ति का अतिशय देख रोमांचित हूँ

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज

संसारी जीव एक व्यापारी की तरह है, जो नित्य शुभ और अशुभ कर्म का संचय करता है, उनका फल भोगता है। अशुभ कर्म का फल दुःख है। शुभ कर्म का फल सुख। मोक्षमार्ग शुभाशुभ कर्म से मुक्त अतीन्द्रिय सुख का साधन है। मोक्षमार्गी साधक प्रधानतया अतीन्द्रिय सुख के मार्ग का आश्रय करते हैं। कदाचित् शुभमार्ग का आश्रय कर अशुभ कर्म की शान्ति का उपाय भी करते हैं, जिनधर्म की प्रभावना करते हैं। जैसे 48 कोठरी में बंद आचार्य मानतुंग स्वामी ने आदिनाथ स्तुति की और ताले स्वयमेव खुल गये। आचार्य वादिराज स्वामी ने जिनस्तुति की और कुष्ठ रोग तत्काल ठीक हो गया। आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने शांति स्तुति की और नेत्र ज्योति आ गई। कवि धनंजय ने आदि स्तुति की और पुत्र का विष तत्काल शान्त हो गया, पुत्र मानो सोते से जाग गया, जिनधर्म की भी महाप्रभावना हुई।

सच 25.12.2015 का दिन मैं कभी भूल नहीं सकता जब दोपहर सामायिक हेतु चतुर्दिक् कायोत्सर्ग कर मैं बैठने ही वाला था कि 15 दिन से अत्यन्त अस्वस्थ आँचल दीदी को संघस्थ दीदीयाँ व्हील चेयर से आशीर्वाद हेतु लाईं। पैरालाइसिस जैसी शिकायत होने से पैर-हाथ से तो असमर्थता थी ही, आज आँखों से दिखना एवं कानों से सुनना भी बंद हो गया था। अत्यन्त दयनीय हालत में दीदी को देखकर हृदय करुणा से द्रवित हो उठा। मन ही मन भगवान शांतिनाथ का स्मरण कर प्रभु से बोला – 'हे नाथ! 22 वर्षीय असाध्य रोग से पीड़ित आँचल दीदी की अस्वस्थता आँखों से देखी नहीं जाती। प्रसिद्ध डॉक्टर्स भी स्पष्ट मना कर चुके हैं कि दीदी अब कभी स्वस्थ नहीं हो सकतीं। हमारे मेडिकल साइंस में यह प्रथम केस है कि दीदी की रिपोर्ट नॉर्मल है और अस्वस्थता बढ़ती जा रही है। हे प्रभो! अब तो एकमात्र आपकी भक्ति ही शरण है। सच्चा भक्त आपकी भक्ति के फल से जब पूर्ण निरामय अवस्था को प्राप्त कर सकता है, तो इस रोग से मुक्ति क्यों नहीं मिलेगी।' मैं अत्यन्त करुणा से भरा हुआ आँचल दीदी से बोला – बेटा! मैं तुम्हें शांतिभक्ति सुना रहा हूँ, मेरी आज की यही सामायिक है, मैं भगवान शांतिनाथ को हृदयकमल पर विराजमान करके आचार्य भगवन् पूज्यपाद स्वामी का भक्ति से स्मरण कर, पूज्य आचार्य गुरुदेव विरागसागर जी का आशीष अनुभव कर अत्यन्त तन्मयता के साथ शांतिभक्ति का उच्चारण करने लगा। अपूर्व विशुद्धि अनुभव हो रही थी, रोम-रोम भक्ति रस में सराबोर था। तभी अचानक आँचल दीदी की आँखों में नेत्र ज्योति आ गई, कानों से स्पष्ट सुनाई देने लगा, मुख का टेढ़ापन दूर हो गया और निश्चल हाथ की अंगुलियाँ स्वयमेव खुल गईं, हाथ भी सहज चलने लगा। कमरे में जितने लोग थे, सभी जय-जयकार करने लगे। शांतिभक्ति का अतिशय देख सभी रोमांचित हो गये। आँचल दीदी बोलीं – गुरुदेव! मेरा चेहरा पहले जैसा हो गया है। मैं पहले की तरह ही बोल रही हूँ न। मुझे पहले की तरह ही दिखाई एवं सुनाई भी दे रहा है। मैंने कहा – बेटा! यह सब भगवान शांतिनाथ की कृपा है। आँचल दीदी बोलीं – गुरुदेव! अब तो मैं आहार का शोधन भी कर सकती हूँ, और हाथों से आहार दे भी सकती हूँ, तभी उनका ध्यान अपने संवेदना शून्य पैर पर गया, बोलीं गुरुदेव! यदि मेरा पैर भी ठीक हो जाता तो मैं आपको जल्दी आहार दे पाती। मैंने कहा – बेटा! भगवान शांतिनाथ की भक्ति से वह भी शीघ्र ठीक होगा। मैंने पुन: दीदी को शांतिभक्ति सुनाना शुरू किया, दीदी भी साथ पढ़ने लगीं। अहो! अद्भुत आनन्द रस बहने लगा प्रभु की भक्ति करते। तभी दीदी के पैर की अंगुलियाँ चलने लगीं और दीदी अपने पैरों पर खड़ी हो गईं। व्हील चेयर को पीछे धकेल दिया और कमरे में ही चलने लगीं। अभी शांतिभक्ति पूर्ण नहीं हुई थी, अत: मैंने कहा – बेटा! भक्ति कर लो। सभी ने भावपूर्वक शांतिभक्ति पूर्ण की। आँचल दीदी बोलीं – गुरुदेव! ऐसा लग रहा है मानो सोकर उठी हूँ। गुरुदेव! मैं तो बिल्कुल ठीक हो गई। मैंने कहा – बेटा! शांतिभक्ति के प्रसाद से तुम ठीक हुई हो। दीदी बोलीं – गुरुदेव सब आपकी ही कृपा है।

कमरे में दीदी के माता-पिता भी उपस्थित थे। यह भक्ति का चमत्कार देख उनकी आँखों से खुशी के आँसू ढुलक रहे थे। मैंने कहा – अब सभी लोग भगवान शांतिनाथ के पास चलेंगे। एक बार वहाँ भी शांतिभक्ति का पाठ करेंगे। दीदी ने कहा – अब मैं व्हील चेयर से नहीं, पैदल ही चलूँगी। अहो! दीदी को पैदल चलते देख उपस्थित सैकड़ों भक्त जन आश्चर्य करने लगे। हमने शांति जिनालय में पुन: शांतिभक्ति का पाठ किया और भगवान शांतिनाथ के चरणों का भावपूर्वक स्पर्श कर आँचल दीदी को एवं संघस्थ सभी साधुओं को आशीर्वाद दिया। फिर हम सभी प.पू. सूरिगच्छाचार्य गुरुदेव श्री विरागसागर जी के पास पहुँचे, वहाँ दीदी ने आचार्य वंदना की। पूज्य गुरुदेव ने मंगल आशीर्वाद दिया, और कहा – आहारजी में घटी यह अतिशयकारी घटना यहाँ चिरकाल तक गुंजायमान होती रहेगी।

सच, मैं बेहद रोमांचित और आनंदित हूँ। शांतिभक्ति का पाठ करते समय जो विशुद्धि और आनंद का अनुभव हुआ, वह शब्दों से व्यक्त नहीं किया जा सकता। भक्ति का यह अतिशय चमत्कार स्मृति पटल पर बार-बार आता ही रहता है। जिनेन्द्र भक्ति का माहात्म्य यही तो है–

विघ्नौघा प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगा:।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।

अर्थात् जिनेश्वर की स्तुति करने पर विघ्नों का समूह तथा शाकिनी, भूत, सर्प आदि की बाधाएँ क्षण भर में क्षय को प्राप्त हो जाती हैं और विष भी निर्विषता को प्राप्त होता है।

जानें, क्या है जिनागम पंथ?

–भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज

'जिनागम पंथ' अनादि–अनिधन, विश्व मैत्री, प्रेम, एकता का परम पावन संदेश है, जो तीर्थंकर भगवंत,केवली अरिहन्त, गणधर संत, आचार्य–उपाध्याय–निर्ग्रंथ के मुख से अतीतकाल में कहा गया, वर्तमान में कहा जा रहा है और भविष्यकाल में कहा जायेगा।

अहो! तीर्थंकर जिन की वाणी यानि जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम और इसमें वर्णित आत्महितकारी पंथ, मार्ग। यही है जिनागम पंथ।

अहो! जिनागम में कथित पंथ अर्थात् मार्ग, यही सच्चा था सच्चा है और सच्चा रहेगा। तीर्थंकर सर्वज्ञ जिन की वाणी ही जिनागम है। और जिनागम में कथित श्रमण–श्रावक धर्म यह पंथ अर्थात् मार्ग है। जो श्रमण–श्रावक धर्म के मार्ग पर चल रहा है वह जिनागम पंथ का पथिक 'जिनागम पंथी' है।

सचमुच जिनागम पंथ शाश्वत था, शाश्वत है, शाश्वत रहेगा। जो जिनागम पंथ का पथिक है वह सम्यग्दृष्टि, श्रावक अथवा श्रमण संज्ञा को प्राप्त जिनागम पंथी है। जो जिनागम पंथ की श्रद्धा से रहित है वह मिथ्यादृष्टि है।

अहो! विदेह क्षेत्र में विराजित विद्यमान बीस तीर्थंकरों के मुख से गणधरादि परमेष्ठी भगवंतों के द्वारा आज भी जिनवाणी, जिनश्रुत, जिनागम प्रगट हो रहा है।

धन्य हैं, वे भव्य जीव जो जिनागम कथित समीचीन पंथ अर्थात् जिनागम पंथ को स्वीकार कर अनादि मोह, राग–द्वेष की परम्परा का विच्छेदन कर आत्मकल्याण कर रहे हैं। अहो! जिनागम पंथ के अलावा अन्य कोई कल्याण का मार्ग नहीं है। जिनागम पंथ के अलावा अन्य पंथ उन्मार्ग हैं, अकल्याणकारी हैं।

जयदु जिणागम पंथो, रागो–दोसो य णासगो सेयो।
पंथो तेरह – बीसो, रागादि – वड्ढिओ असेयो।।

जो रागद्वेष का नाश करनेवाला है, कल्याणकारी है, ऐसा 'जिनागम पंथ जयवंत हो'। इसके अलावा तेरहपंथ, बीसपंथ आदि पंथ, रागद्वेष को बढ़ाने वाले हैं, अकल्याणकारी हैं।

अहो! कालदोष के कारण कतिपय विद्वानों ने तीर्थंकर जिनदेव के मुख से भाषित अर्थात् सर्वांग से खिरनेवाली दिव्यध्वनि में कथित जिनागम पंथ से बाह्य तेरहपंथ, बीसपंथ, शुद्ध तेरहपंथ आदि नाना पंथों की संज्ञाएँ रखकर परस्पर रागद्वेष को जन्म दिया है। कुछ विद्वान एवं श्रमण संज्ञा से भूषित जीवों ने भी ख्याति–पूजा–लाभ के लिए नये–नये पंथ गढ़कर भव्य जीवों का महान् अहित किया है।

अहो! अज्ञानता, आज ये जीव इन नाना संज्ञाओं से पंथों का पोषणकर जिनागम पंथ से दूर खड़े हो गये हैं। और कल्पित पंथों का पोषणकर अपना आत्म पतन ही कर रहे हैं। तेरह–बीस आदि संज्ञाएँ जिनेन्द्र देव की वाणी से बाह्य हैं। ये जिनागम पंथ से बाह्य पंथ ही वर्तमान में राग–द्वेष का कारण बने हुये हैं। चारों तरफ समाज में विघटन, मंदिरों में खींचतान, इन कल्पित तेरह–बीस आदि पंथों की ही देन है। जिनागम पंथ सभी को एक सूत्र में बाँधकर मैत्री–प्रेम–वात्सल्य का संदेश देता है।

अहो! आज भी यदि स्वकल्पित पंथों का दुराग्रह छोड़कर सब जीव जिनेन्द्र देव की वाणी यानि जिनवाणी, जिनागम में श्रद्धा रखें और जिनागम वर्णित पंथ यानि 'जिनागम पंथ' को सच्ची श्रद्धा से स्वीकारें, तो सर्व समाज में आज भी एकता का सूत्रपात हो सकता है। आपस के रागद्वेष मिट सकते हैं और जिनशासन गौरवान्वित हो सकता है।

'जयदु जिणागम पंथो।'
'जिनागम पंथ जयवंत हो।'

आइरिय-विमरस्ससायरेण विरइदा

सरूव थुदी

उवओगमओ अप्पा अहं, जाणगसरूवो मम अहा।
णिद्दंदो अहमणिबंधो हं, आणंदकंद-सहज-महा।।
जाणिय सया दु संतमओ, णिय संतरस-पीउं सया।
णिय संतरस-लीणम्मि हं, णिय चेद-धुवरूवो अहा।।1।।

महसु असंखपदेसेसुं, भयवंत-अप्पा णिवसदि।
हं हुवमि परमप्पा सयं, परमप्प-रूवो विलसदि।।
हं सिद्धकुल-अंसो हुवमि, हु दंसावदि भविदव्वदा।
णिय सत्ति-अंसदो सिद्धो हं, दव्वस्स णिय णिय दव्वदा।।2।।

रागादि-भाव दु विगडीआ, दव्वम्मि णिय णवि दंसणं।
परदव्व-परभावाण दु, रूवम्मि चिद णवि फंसणं।।
पुहु सव्वदो विर सव्वदो, अवियाररूवो मम अहा,
हं पूर-सहजसहावदो, जो हु वीदरागमओ कहा।।3।।

गुण-दव्वदो हं धुवमहा, परिणमं णियदं पत्तो हं।
परिणदं अत्तमओ खलु, सत्तीए णियदओ अत्तो हं।।
कारण सयं हं कज्जमवि, सिवमग्गो मग्गफलं सयं।
हं भावलिंगी संतो जाणग- हुवमि सफल हु जीवणं।।4।।

स्वरूप स्तुति

(आचार्य विमर्शसागर कृत)

हूँ आत्मा उपयोगमय, ज्ञायक स्वभाव मेरा अहा।
निर्द्वन्द हूँ निर्बन्ध हूँ, आनन्दकन्द सहज अहा।।
नित शान्तरसमय जानकर, निज शान्तरस नित पानकर।
निज शांतरस में लीन हूँ, ध्रुवरूप निज अनुभव अहा।।1।।

मेरे असंख्यप्रदेश में, भगवान् आतम बस रहा।
मैं हूँ स्वयं परमात्मा, परमात्मरूप विलस रहा।।
हूँ सिद्धकुल का अंश मैं, बतला रही भवितव्यता।
मैं सिद्ध शक्ति अंश से, निजद्रव्य की निज द्रव्यता।।2।।

रागादि भाव विकार का, निजद्रव्य में दर्शन नहीं।
परद्रव्य या परभाव का, चित् रूप स्पर्शन नहीं।।
सबसे पृथक सबसे विलग, अविकार रूप मेरा अहा।
मैं पूर्ण सहज स्वभाव से, जो वीतरागमयी कहा।।3।।

हूँ द्रव्य-गुण से ध्रुव अहा, नित परिणमन को प्राप्त हूँ।
परिणमन निश्चय आप्तमय, शक्ति से निश्चय आप्त हूँ।।
कारण स्वयं हूँ कार्य भी, शिवमार्ग स्वयं हूँ मार्गफल।
मैं भावलिंगी संत हूँ, ज्ञायक हूँ मैं, जीवन सफल।।4।।

विमस्स–अट्ठगं

(डॉ. उदयचन्द्र जैन कृत)

बंधं पबंभ–अदि–णंद–विराग–मुत्तिं
तित्थेस–णायग–जिणं सयलं च तित्थं।
तच्चं अणंत–सुविस्स–विमस्स–णंदं
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।1।।

अप्पं विसुद्ध–परिणाम–विमस्स–णीरं।
णीरेज्ज जीवण–जलं बहुमुल्ल–खीरं।
चक्खेदि सच्छ–परमप्प–रसं च णिच्चं।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।2।।

सारं च सार–समयं समयं च सारं
पत्तेज्ज सो णियमसार–पहुत्त–धीरं।
णिम्मल्ल–मल्ल–मदिमल्ल–सुदं च सुत्तं।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।3।।

रम्माहिरम्म–कवि–कम्म–पहाण–कव्वं।
गीएज्ज गीद–जण–खेत्त–सु–विज्ज–विज्जे।
मज्झप्पदेस–अणुसिक्खण–साल–साले
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।4।।

आयार–पूद–सुविराग–विराग–सूरिं
णाणं च दंसण–चरित्त–तवं च णीरं।
णेदूणणिच्च रमदे हु विमस्स–छंदं।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।5।।

धुव्वो हु तारग–जतार–सुणंदणो सो।
सिप्पी इमो विविह–कब्ब कलंस–चंदो।
चारित्त–सम्मग–रही दु विमस्स–सीलो।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।6।।

संपुण्ण–सारद–बई सुद–आगमम्हि।
आरूढ़–हंस–समणाइरियो विमस्सो।
लिप्पि सिजेदि लिवि–बंह–विमस्स–णामं
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।7।।

सामाण्ण–धम्म–अणुपालिद–भावलिंगी।
झाणे तवे समयसार समे णिमग्गो।
मग्गटपभावण–गुणी सुद–सेवि–साधुं।
णम्मेमि रट्ठिग–सुजोगि–विमस्स–सूरिं।।8।।

विमस्स–उदयो चंदो, विमस्से सम–संतए।
दंसेदि सावगाणं च, वाए वागेसरी–समे।।

मंगलाष्टक

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः,
आचार्या[1] जिनशासनोन्नति–कराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्रीसिद्धान्त–सुपाठका मुनिवराः[2] रत्नत्रया–राधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं कुर्वन्तु ते मंगलम्।।1।।

श्रीमन्नम्र – सुरा – सुरेन्द्र – मुकुट – प्रद्योत – रत्नप्रभा,
भास्वत्पाद–नखेन्दवः प्रवचनाम्– भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन–सिद्ध–सूर्यनुगताः ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पञ्च गुरवः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।2।।

सम्यग्दर्शन – बोध – वृत्त – ममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्तिश्री नगराधि–नाथ–जिनपत्–युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्ति–सुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयः श्रयालयः[3],
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विध–ममी कुर्वन्तु ते मंगलम्।।3।।

नाभेयादि जिनाः प्रशस्त–वदनाः[4] ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर–प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु–प्रतिविष्णु–लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि–पुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।4।।

ये सर्वौषधि[5]–ऋद्धयः सुतपसां[6] वृद्धिंगताः पञ्च ये,
ये चाष्टांग–महा–निमित्त–कुशलाश्चाष्टौ वियच्चारिणः[7]।
पञ्चज्ञान–धरास्त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता मुनीवराः[8] कुर्वन्तु ते मंगलम्।।5।।

ज्योतिर्व्यन्तर–भावनामरगृहे, मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः[9],
जम्बूशाल्मलि–चैत्य–शाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु।
इष्वाकार–गिरौ च कुण्डल–नगे द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।6।।

1. सिद्धीश्वराः, आचार्याः, 2. सुपाठकाः मुनिवराः, 3. चैत्यालयं श्रयालयं, 4. जिनाधिपास्त्रिभुवन, 5. सर्वौषध, 6. सुतपसो, 7. कुशला येऽष्टौ विधाश्चारणाः, 8. गणभृतः 9. तथा

कैलासे वृषभस्य निर्वृति-मही वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः सम्मेद-शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणावनयः प्रसिद्ध-विभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।7।।

सर्पोहार-लता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते,
सम्पद्येत रसायनं विषमपि - प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा[1] यान्ति वशं प्रसन्न मनसः किं वा बहुब्रूमहे,
धर्मादेव-नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।8।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञान-भाक्।
यः कैवल्य-पुर-प्रवेश-महिमा सम्पादितः[2] स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मंगलम्।।9।।

इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्य-सम्पत्करम्[3],
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस् तीर्थंकराणामुषः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनैर्धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय-रहिता निर्वाण-लक्ष्मीरपि।।10।।

।। इति श्री मंगलाष्टक-स्तोत्रम् ।।

जल शुद्धि मंत्र - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म-महापद्म-तिगिंछ-केसरी-पुण्डरीक-महापुण्डरीक-गंगासिन्धु-रोहि-द्रोहितास्या-हरिद्-धरिकान्ता-सीतासीतोदा-नारी-नरकान्ता-सुवर्णकूला-रूप्यकूला-रक्ता-रक्तोदा-क्षीराम्भोनिधि-शुद्धजलं सुवर्णघटं प्रक्षालित-परिपूरितं नवरत्न-गंधाक्षत-पुष्पार्चितं ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

1. देवाः, 2. सम्भाविताः, 3. सम्पत्प्रदम्

हस्त प्रक्षालन मंत्र - ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा हस्त प्रक्षालनं करोमि।

अमृत स्नान मंत्र - ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

तिलक करण मन्त्र

पात्रेऽर्पितं चन्दनमौषधीशं, शुभ्रं सुगन्धाहृत-चञ्चरीकम्।
स्थाने नवांके तिलकाय चर्च्यं, न केवलं देहविकारहेतोः।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम यजमानस्य सर्वांगशुद्धि हेतवः नवतिलकं करोम्यहम्।

तिलक के नवस्थान - 1. शिखा, 2. मस्तक, 3. ग्रीवा, 4. हृदय, 5. दोनों भुजायें, 6. पीठ, 7. कान, 8. नाभि, 9. कलाई।

दिग्बन्धन

पूर्वदिशा में - ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशा-समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

आग्नेयदिशा में - ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं आग्नेयदिशा-समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

दक्षिणदिशा में - ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं दक्षिणदिशा-समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

नैर्ऋत्यदिशा में - ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं नैर्ऋत्यदिशा-समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

पश्चिमदिशा में - ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः पश्चिमदिशा-समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

वायव्यदिशा में - ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां वायव्य दिशा-समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

उत्तरदिशा में – ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं उत्तरदिशा–समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

ऐशानदिशा में – ॐ ह्रूं णमो आइरियाणं ह्रूं ऐशानदिशा–समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

अधोदिशा में – ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अधोदिशा–समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

ऊर्ध्वदिशा में – ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः ऊर्ध्वदिशा–समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वदिशा में – ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः णमो अरिहंताणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदिशा–समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय माम् एतान् सर्व रक्ष रक्ष स्वाहा।

सर्वदिशा में रक्षामंत्र –ॐ ह्रूं क्षूं फट् किरिटि किरिटि, घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय, सहस्रखण्डान् कुरु कुरु, परमुद्रां छिन्द छिन्द, परमंत्रान् भिन्द भिन्द, क्षां क्षः वाः वाः ह्रूं फट् स्वाहा।

सर्वदिशा में शान्तिमंत्र –ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष–कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वपाप–प्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगापमृत्यु–विनाशनाय सर्वपरकृत–क्षुद्रोपद्रव–विनाशनाय सर्वक्षामडामर–विनाशनाय सर्वारिष्ट–शान्तिकराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः माम् सर्वशान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु स्वाहा।

पात्र अंगशुद्धि मंत्र –

शोधये सर्व–पात्राणि, पूजार्था–नपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नाय, करोमि सकलीक्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर–जलेन पात्रशुद्धिं करोमि स्वाहा।

क्षेत्र आज्ञा एवं भूमिशुद्धि मंत्र – ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जिनगर्भगृह–क्षेत्रे धरित्री जाग्रतावस्थायां कुरु कुरु स्वाहा।

भूमिशुद्धि मंत्र –

ओं शोधयामि भूभागं, जिनधर्माभिरुत्सवे।
काल–धौतोज्ज्वल–स्थूल, कलशापूर्ण वारिणि।।

ॐ ह्रीं नमः सर्वज्ञाय सर्वलोकनाथाय धर्मतीर्थनाथाय परम–पवित्रेभ्यः शुद्धेभ्यः नमः पवित्र–जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

दाहिने हाथ में रक्षासूत्र बाँधने का मंत्र – ॐ नमोऽर्हते सर्वं रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीतधारण मंत्र – ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणाय अहं रत्नत्रयस्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

मंगल कलश में सुपाड़ी आदि डालने का मंत्र – ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे पूंगादि फलादि प्रभृति वस्तूनि प्रक्षिपामीति इति स्वाहा।

मंगल कलश के ऊपर श्री फल रखने का मंत्र – ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षों क्षौं क्षः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश–स्थापन मन्त्र

ॐ श्रीमत् अर्हत् परमेश्वरोपदिष्ट शिष्टेष्टदयामूल–धर्मप्रभावक–यष्ट–याजक–प्रभृति–भव्यजनानां सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभि–वृद्धिरस्तु। श्रीमज्जिनशासने भगवतो महति महावीर–वर्द्धमान–तीर्थंकरस्य धर्मतीर्थे श्रीमूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये मध्यलोके जम्बूद्वीपे सुदर्शन–मेरोर्दक्षिण–भागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे...प्रान्ते... नगरे विविधालंकार–मंडित–यज्ञमण्डपे हुण्डावसर्पिणी काले दुःखं नाम्नि पंचमकालयुगे प्रवर्त्तमाने वीरनिर्वाण... संवत्सरे मासोत्तममासे... पक्षे...तिथौ...वासरे...जिनप्रतिमायाः

वीरनिर्वाण... संवत्सरे मासोत्तममासे... पक्षे...तिथौ...वासरे...जिनप्रतिमाया: सन्निधौ दिगम्बर-जैनाचार्य-श्री आदि-महावीर-विमल-सन्मति-विराग-विमर्शसागर परम्परायां मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविकादि-चतुर्विध-संघसन्निधौ।... विधानोत्सवे निर्विघ्न-समाप्त्यर्थं सकलाभ्युदय नि:श्रेयस सिद्ध्यर्थं शुद्ध्यर्थं द्रव्य शुद्ध्यर्थं याज्ञ शुद्ध्यर्थं क्रिया-शुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्ध-पुष्पाक्षतादि-बीजपूरशोभित-शुद्धप्रासुक-जलपरिपूरित-मंगलकुम्भं मण्डपाग्रे स्वस्त्यै स्थापनं करोमि झं क्ष्वीं हं स: स्वाहा।

नोट – यह पढ़कर मण्डल के पूर्व-उत्तर कोने में जल, अक्षत, पुष्प, हल्दी, सुपारी, सवा रुपया, श्रीफल और पुष्पमाला सहित मंगलकलश श्रावक द्वारा स्थापित कराया जावे। इस कलश को पुण्याहवाचन कलश भी कहते हैं।

चारों कोनों पर कलश स्थापना का मंत्र –

ॐ आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे-मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे...प्रान्ते...नगरे.....जिनप्रतिमाया: सन्निधौ। ....विधानोत्सवे वीरनिर्वाण... संवत्सरे मासोत्तममासे..... पक्षे..... तिथौ.... वासरे... विधानकार्यस्य निर्विघ्न-समाप्त्यर्थं मण्डप भूमि शुद्ध्यर्थं पात्र शुद्ध्यर्थं क्रिया-शुद्ध्यर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षतादि-बीजपूरादिशोभितम्...यजमानस्य हस्ताभ्यां मंगलकलश-स्थापनं करोमि झ्वीं क्ष्वीं हं स: मंगलं भवतु स्वाहा। ॐ ह्रीं स्वस्तये पुण्यकुम्भं स्थापयामि स्वाहा।

नांदीकुम्भ को सूत्र से बाँधने का मंत्र – ॐ नमो भगवते अ सि आ उ सा ऐं ह्रीं ह्रां ह्रीं संवौषट् त्रिवर्णसूत्रेण शान्तिकुभं वेष्टयामि।

चारों विदिशाओं में धूपघट स्थापन मंत्र – ॐ ह्रीं अष्टकर्म-भस्मीकरणाय सर्वदिग्वात-सुगंधिकरणाय दशांग-धूपक्षेपणार्थं ईशान-आग्नेय-नैऋत्य-वायव्य-कोणे धूपघटस्थापनं करोमि स्वाहा।

दीप स्थापना मंत्र–

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोक-सुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिर जाल हरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा।।

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिर हरं दीपकं स्थापयामीति स्वाहा।

लघु अभिषेक पाठ

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नाय, करोमि सकली क्रियाम्।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पवित्रतर जलेन शुद्धिं करोमीति स्वाहा।
(जल से शुद्धि करें)

श्रीमज्जिनेन्द्र – मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वादनायक – मनन्त चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ – सुदृशां सुकृतैक हेतुः,
जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाभ्यधायि।।1।।

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पांजलिं क्षिपामि।

सौगन्ध्य–सङ्गत–मधुव्रत झङ्कृतेन,
सम्वर्ण्य–मानमिव गन्धमनिन्द्य–मादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वर–वृन्द–वन्द्य–
पादारविन्द–मभिवन्द्य जिनोत्तमानाम्।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः मम सर्वांग शुद्धिं कुरु कुरु।
(यह पढ़कर चंदन से तिलक लगाना व हाथ धोना)

ये सन्ति केचिदिह दिव्य–कुल–प्रसूताः,
नागाः प्रभूत बल–दर्पयुता विबोधाः।
संरक्षणार्थ–ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षालयामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्।।3।।

ॐ ह्रीं जलेनभूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।
(यह पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरै – र्यदनेकवारम्।
अत्युद्य–मुद्यत–महं जिनपाद पीठं,
प्रक्षालयामि भव–सम्भव–तापहारि।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।
(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है उस थाली को धोवें)

श्री शारदा–सुमुख–निर्गत बीजवर्ण,
श्री मङ्गलीक–वर–सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत्स्वयं क्षयति तस्य विनाशविघ्नं,
श्रीकार–वर्ण–लिखितं जिन भद्रपीठे।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीकार लेखनं करोमि।
(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है उस थाली में 'श्री' लिखें)

यं पाण्डुकामल–शिलागतमादिदेव–
मस्ना – पयन्सुरवराः सुरशैलमूर्ध्नि।
कल्याण–मीप्सुरह–मक्षत तोय पुष्पैः।
सम्भावयामि पुर एव तदीय–बिम्बम्।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमा स्थापनम् करोमि स्वाहा।
(यह पढ़कर श्रीवर्ण पर प्रतिमा स्थापन करना चाहिए)

सत्पल्लवार्चित–मुखान्–कलधौतरौप्य–
ताम्रारकूट – घटितान्पयसा सुपूर्णान्।
सम्वाह्यतामिव गतांश्चतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशाज्जिन वेदिकान्ते।।7।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकोणेषु कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल मंगल गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

दूरावनम्र सुरनाथ-किरीट-कोटी-
संलग्न-रत्न-किरणच्छवि-धूसराङ्घ्रिम्।
प्रस्वेद-ताप-मल-मुक्तिमपि प्रकृष्टैः,
भक्त्या जलैर्जिनपतिं, बहुधाभिषिञ्चे।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परंदेवं आद्यानामाद्ये-मध्यलोके-जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्य खण्डे-भारतदेशे...प्रदेशे...जिले... नगरे...मासे...पक्षे...तिथौ वासरे शुभदिने पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक-श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः। (मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका जो तीर्थंकर भगवान के ऊपर जल की धारा देवें, देखें ताके कर्मन की क्षय।)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे-जिननाथ महं यजे।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इष्टैर्मनोरथ-शतैरिव भव्य पुंसां,
पूर्णैः सुवर्ण कलशै-र्निखलै-र्वसानैः।
संसार सागर-विलंघन, हेतु-सेतु-
माप्लावये त्रिभुवनैक-पतिं जिनेन्द्रम्।।9।।

(यहाँ चारों कलश से अभिषेक करें)

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परंदेवं आद्यानामाद्ये-मध्यलोके-जम्बूद्वीपे-भरतक्षेत्रे-आर्य खण्डे-भारतदेशे...प्रदेशे...जिले...नगरे...मासे...पक्षे...तिथौ वासरे शुभदिने पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक-श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

(मुनि, आर्यिका, श्रावक-श्राविका जो तीर्थंकर भगवान के ऊपर जल की धारा देवें, देखें ताके कर्मन की क्षय।)

पानीय - चंदन - सदक्षत - पुष्प पुंज,
नैवेद्य - दीपक - सुधूप - फल - व्रजेन।
कर्माष्टकं कथन वीर - मनंत शक्तिं,
संपूजयामि महसा महसां निधानम्।।

ॐ ह्रीं अभिषेकान्तेश्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा - मुहुर्निज करै - रमृतोपमेयैः,
स्वच्छै - र्जिनेन्द्र तव चन्द्र करावदातैः।
शुद्धांशुकेन विमलेन नितांतरम्ये,
देहे स्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेनजिनबिम्ब मार्जनं करोमि।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ-महं यजे।।

ॐ ह्रीं सिंहासन स्थित अर्हत् देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इतिश्री लघुअभिषेक पाठ)

लघु शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्री शान्तिनाथ तीर्थंकराय द्वादशगण-परिवेष्टिताय, शुक्लध्यान-पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयम्भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्य-मही व्याप्ताय अनन्त-संसार-चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त-दर्शनाय, अनन्त-ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त-सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशंकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र-फणामण्डल-मण्डिताय ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका-प्रमुख-चतुस्संघोपसर्ग-विनाशनाय घातिकर्मविनाशनाय अघातिकर्मविनाशनाय (शान्तिधारा कर्ता का नाम) **अपवादं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **मृत्युं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **अतिकामं** छिन्धि छिन्धि

भिन्धि भिन्धि। **रतिकामं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **बलिकामं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **क्रोधं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **अग्निभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वशत्रुभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वोपसर्गं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वविघ्नं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वराज्यभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वचोरभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वदुष्टभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वमृगभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वपरमंत्रं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वशूलरोगं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वक्षयरोगं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वकुष्ठरोगं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वक्रूररोगं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वनरमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वगजमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्व-अश्वमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वगोमारिं**-छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्व महिषमारिं**-छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वधान्यमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्ववृक्षमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वगुल्ममारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वपुष्पमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वफलमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वराष्ट्रमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वदेशमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वविषमारिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्ववेताल शाकिनी भयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वमोहनीयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्व वेदनीयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि। **सर्वकर्माष्टकं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि।

ॐ सुदर्शन-महाराज-चक्रविक्रम-सत्त्व-तेजोबल-शौर्यवीर्यशान्तिं कुरु कुरु। **सर्वजीवानन्दनं** कुरु कुरु। **सर्वभव्यानंदनं** कुरु कुरु। **सर्वगोकुलानंदनं** कुरु कुरु। **सर्वराजानंदनं** कुरु कुरु। **सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटम्ब-पत्तण-द्रोणमुख-संवाहनानंदनं** कुरु कुरु। **सर्वलोकानंदनं** कुरु कुरु। **सर्वदेशानंदनं** कुरु कुरु। **सर्वयजमानानंदनं** कुरु कुरु। **सर्वं दुःखं** हन हन दह दह पच पच कुट कुट शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधिर्व्यसनवर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

शिवमस्तु, कुलगोत्र-धन धान्य सदास्तु। चन्द्रप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नमः।

(इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गन्धोदक-धारावर्षणम्।)

श्री शान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। सर्वेषां पुष्टिरस्तु। तुष्टिरस्तु, समृद्धिरस्तु। कल्याणमस्तु। सुखमस्तु। दीर्घायुरस्तु, कुलगोत्र धनधान्यं सदास्तु, श्री सद्धर्म-बल-आयु-आरोग्य-ऐश्वर्य अभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्णं कल्याणमंगलरूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतुः।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्यतेजो मूर्तये श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वविघ्न प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्व क्षाम-डामर विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व देशस्य चतुर्विध संघस्य तथैव सर्वविश्वस्य तथैव मम (शांति धारा कर्ता का नाम) सर्वशांति कुरु कुरु, तुष्टिं कुरु कुरु, पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र-सामान्य-तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः।।

(इति लघु शान्तिधारा)

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।
अनंत चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज।।2।।
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि-शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव-सुख के करतार।।3।।
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म-प्रकाश।
थिरता-पद दातार हो, धरता निज गुण रास।।4।।
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँजग भूप।।5।।
मैं वन्दौं जिनदेव को, करि अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछु उपाव।।6।।
भविजन को भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भंडार।।7।।
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल।।8।।
तुम पद-पंकज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय।।9।।
चक्री खगधर इन्द्रपद, मिलैं आप तैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव।।12।।
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।13।।
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबैं, मेटो रोग कुटेव।।14।।
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अजान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार।।17।।
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान।।18।।
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार।।19।।
जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटैं उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार।।20।।
वंदों पाँचों परमगुरु सुरगुरु वंदत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश।।21।।
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय।।22।।
मंगल मूरति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान।।23।।

मंगल जिनवर पद नमो, मंगल अर्हत देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव।।24।।
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन-वच-काय।।25।।
मंगल सरस्वति मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगल करो, हरो असाता कर्म।।26।।
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भव सागर दृढ़ पोत।।27।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।)
(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नम: (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल विधान

अपवित्र: पवित्रो वा, सुस्थितो दु:स्थितोऽपि वा।
ध्यायेत् पंच-नमस्कारं, सर्वपापै: प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्र: पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
य: स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्यभ्यन्तरे शुचि:।।2।।
अपरा - जित - मंत्रोऽयं, सर्व-विघ्न-विनाशन:।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मत:।।3।।
एसो पंच-णमो-यारो, सव्व-पावप्पणा-सणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।4।।
अर्ह - मित्यक्षरं ब्रह्म, - वाचकं परमेष्ठिन:।
सिद्ध-चक्रस्य सद्-बीजं, सर्वत: प्रणमाम्यहम्।।5।।
कर्माष्टक - विनिर्मुक्तं, मोक्ष-लक्ष्मी-निकेतनं।
सम्यक्त्वादि-गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।
विघ्नौघा: प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगा:।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

पंचकल्याणक का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकै:।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याण-महं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकै:।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाम यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन-अष्टोत्तर-सहस्र-नामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्र-महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि तत्त्वार्थसूत्र-दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विमर्शसागर जी का अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्, चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूरीन्द्रं यजामहे।।

ॐ ह्रीं श्री शताष्टगुणसहित आचार्यश्री विमर्शसागरादि-त्रिन्यून-नवकोटि-मुनिवरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्-जिनेन्द्र-मभि-वंद्य-जगत्-त्रयेशं,
स्याद्वाद - नायक - मनन्त - चतुष्ट - यार्हम्।
श्रीमूल - संघ - सुदृशां सुकृतैक - हेतुः,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधि-रेष मयाऽभ्यधायि।।1।।

स्वस्ति त्रिलोक - गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव - महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्-मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्-भुत-वैभवाय।।2।।

स्वस्त्युच्छलद्-विमल-बोध-सुधा-प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक-चिदुद्-गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।3।।

द्रव्यस्य शुद्धि-मधि गम्य यथानुरूपं,
भावस्य शुद्धि-मधिका-मधिगन्तु-कामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य - वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।4।।

अर्हन् पुराण - पुरुषोत्तम - पावनानि,
वस्तून्यनून-मखिलान्ययमेक एव।
अस्मिञ् ज्वलद्-विमल केवल बोध वह्नौ,
पुण्यं समग्र-मह-मेक-मना जुहोमि।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगल पाठ

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदंतः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

(प्रत्येक श्लोक के बाद पुष्प क्षेपण करें)

नित्या-प्रकम्पाद्-भुतकेव-लौघा:, स्फुरन्मन:पर्यय-शुद्धबोधा:।
दिव्या-वधिज्ञान-बल-प्रबोधा:, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।1।।
कोष्ठस्थ-धान्योपममेक-बीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धि-बलं दधाना:, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वादन-घ्राण-विलोक-नानि।
दिव्यान्-मतिज्ञान-बलाद्वहन्त:, स्वस्ति क्रियासु:परमर्षयो न:।।3।।
प्रज्ञा-प्रधाना: श्रमणा: समृद्धा:, प्रत्येक-बुद्धा: दश-सर्व-पूर्वै:।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञा:, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।4।।
जंघानल-श्रेणि-फलाम्बु-तन्तु,-प्रसून-बीजांकुर-चार-णाह्वा:।
नभोऽङ्गण - स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।5।।
अणिम्नि दक्षा: कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ता: कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।6।।
सकाम-रूपित्व-वशित्व-मैश्यं, प्राकाम्य-मन्तर्द्धि-मथाप्तिमाप्ता:।
तथाऽप्रतीघात-गुणप्रधाना:, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर पराक्रमस्था:।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरंत:, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।8।।
आमर्ष-सर्वौष-धयस्तथाशी-र्विषाविषा-दृष्टि-विषा-विषाश्च।
सखिल्लविड्जल्ल-मलौषधीशा:, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।9।।
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो, मधुस्त्रवन्तोऽप्यमृतं स्त्रवंत:।
अक्षीण-संवास-महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासु: परमर्षयो न:।।10।।

इति परमर्षि स्वस्ति मंगल विधानं परिपुष्पांजलिं क्षिपामि।

(कायोत्सर्गं करोम्यहम्)

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(रचयिता-भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज)

हे आत्मज्ञ! सर्वज्ञ प्रभो! शुद्धात्मनिधि को प्रगटाया।
जड़द्रव्य-भाव नोकर्मों की, संतति को क्षण में विघटाया।।
जिनवाणी में सम्यक् तत्त्वों का, नित शीतल निर्झर झरता।
निर्ग्रंथ गुरु का शुभ दर्शन, अन्तरमन का कालुष हरता।।
शुभ तीन महानिधियों को पा, रत्नत्रय निधि प्रगटाऊँगा।
श्री देवशास्त्र निर्ग्रंथ गुरु की, पूजा नित्य रचाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु समूह! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरु समूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्। (परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

क्षीरोदधि से, गंगाजल से, तन को स्नान कराया है।
सम्यक्त्व शुद्धजल से अबतक, आतम को न नहलाया है।।
मिथ्यात्व असंयम भावों की, परिणति से मुक्त करो स्वामिन्।
निर्मल जल चरणों में अर्पित, हमको सम्यक्त्व वरो स्वामिन्।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलम् निर्वपामीति स्वाहा।

अब तक इन्द्रिय विषयों में ही, उपयोग मेरा रमता आया।
स्वामिन्! जड़ के आकर्षण से, चारों गति में भ्रमता आया।।
अब भेदज्ञान का चंदन ले, भवताप मिटाने आया हूँ।
अशरीरी सिद्ध प्रभु जैसी, स्थिरता पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-भव में पाये पद अनन्त, तृष्णा न शान्त हुई मेरी।
पद पा सोचूँ 'मैं भी कुछ हूँ', यह मिथ्या भ्रान्ति रही मेरी।।
अविनाशी अक्षय पद पाने, अक्षत का अर्घ्य चढ़ाता हूँ।
चैतन्यधाम में रहूँ सदा, नित यही भावना भाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर भोगों के ईंधन से, क्या काम अग्नि बुझ सकती है।
जितना ईंधन डालो इसमें, यह उतनी तेज धधकती है।।
हूँ चिदानंद चिद्रूप शुद्ध, निज ब्रह्मचर्य में वास करुँ।
चरणों में सुमन समर्पित हैं, इस कामभाव का नाश करुँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म असंख्य प्रदेशों से, शमरस के झरने झरते हैं।
पी तृप्त हुआ करते ज्ञानी, जो निज में सदा विचरते हैं।।
मैं क्षुधारोग से पीड़ित हूँ, उपचार कराने आया हूँ।
नैवेद्य समर्पित चरणों में, निज समरस पीने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म प्रकाशी ज्ञान दीप, समकित से ज्योतिर्मय होता।
मिथ्यात्व तिमिर के नशते ही, अनुभव शुद्धात्म प्रखर होता।।
निज द्रव्य और गुण पर्यय से, इक क्षण अभेदता प्राप्त करूँ।
ज्योतिर्मय दीप समर्पित है, दर्शन मोहान्ध समाप्त करुँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म तत्त्व में तन्मयता, निश्चय तप आग जलाती है।
तब सहज शुभाशुभ कर्मों की, कालुष उसमें जल जाती है।।
शुभ धूप दशांग चढ़ाता हूँ, मेरी शुद्ध परिणति अन्वय हो।
कर्मों की कालुष जल जाये, शुद्धात्म तत्त्व में तन्मय हो।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धात्म निराकुल सुख यह फल, शुद्धात्म ध्यान से फलता है।
निज वीतराग की परिणति से, यह मोक्ष महाफल मिलता है।।
अविनाशी ज्ञान शरीरी बन, निज में अनंत बल प्रगटाऊँ।
अर्पित करता फल चरणों में, निर्भार अतीन्द्रिय फल पाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो महामोक्ष-फलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परम पारिणामिक स्वभाव, ज्ञायक होकर प्रगटाया है।
अरिहंत प्रभु की वाणी में, शुद्धात्म सार यह आया है।।
निज परम पारिणामिक स्वभाव, ऐसा अनर्घ्य पद मिल जाये।
शुभ अर्घ्य समर्पित करता हूँ, चेतन गुण बगिया खिल जाये।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दर्शन-ज्ञानोपयोग युगपत, तिहुँकालों सहज प्रवर्त रहा।
शुद्धात्म अतीन्द्रिय सुख प्रतिक्षण, नूतन-नूतन अनुवर्त रहा।।

सम्पूर्ण द्रव्य-सहभावी-गुण, उनकी क्रमवर्ती-पर्यायें।
परिपूर्ण ज्ञान में प्रतिबिम्बित, सम्बन्ध सहज ज्ञानी गायें।।

अविनाशी अनुपम अचल निधि "श्री" अन्तरंग में हुई प्रगट।
जब कर्म घातिया नष्ट हुए, थी इनकी भी सामर्थ्य विकट।।

शुद्धात्म ध्यान की ले कुठार, संवर जब-जब आगे आता।
आस्रव के पैर ठिठक जाते, निर्जरा तत्त्व हँसकर जाता।।

शुद्धात्म ध्यान तप की महिमा, प्रभु सहज आपने पाई है।
शुद्धात्म ध्यान मैं भी पाऊँ, मन में प्रभु यही समाई है।।

निज ज्ञायक प्रभु की प्रभुता को, ज्ञायक बनकर ही पाऊँगा।
शुद्धात्म प्रदेशों का अमृत, पीकर अमूर्त प्रगटाऊँगा।।

हूँ चिदानंद चैतन्यप्रभु, यह बात आपने बतलाई।
शुद्धात्म सार का कथन जहाँ, वह जिनवाणी माँ कहलाई।।

प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, में सार वही।
द्रव्यानुयोग जिसकी महिमा, कहता उसके अनुसार वही।।

स्याद्वादमयी जिनवाणी माँ, जो अनेकान्त को कहती है।
सच कहता प्रभु सच्ची श्रद्धा, मेरे अन्तस में रहती है।।

जिनवाणी माँ को पाकर ही, कलिकाल हुआ मंगल मेरा।
प्रभु आप विदेह विराजे हो, फिर भी सान्निध्य मुझे तेरा।।

जिनवाणी माँ के आश्रय से, निर्ग्रंथ गुरु का दर्शन है।
शुद्धात्मलीन इन श्रमणराज, चरणों का नित स्पर्शन है।।

चैतन्यराज की महिमा को, इन श्रमणराज ने जाना है।
शुद्धात्म सरोवर की निधियाँ, पाना यह मन में ठाना है।।

शुद्धात्म तत्त्व का कथन सार, श्री गुरु मुख से जब झरता है।
मन हिरण आत्म उपवन में तब, नित सहज कुलाँचें भरता है।।

हे तपोमूर्ति! निर्ग्रंथ गुरु, मेरा अन्तरतम दूर करो।
शुद्धात्म तत्त्व को प्राप्त करूँ, मन में भक्ति भरपूर करो।।

हे देव-शास्त्र निर्ग्रंथ गुरु, पूजन में हर्षित अन्तरमन।
सम्यक् 'विमर्श' नित शरण मिले, स्वीकारो बारम्बार नमन।।

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्रगुरुभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु-पूजा प्रभु ध्यान से, हो निर्मल परिणाम।
स्वर्गादिक सुख भोगकर, मिले मोक्ष निष्काम।।

(परिपुष्पांजलिं क्षिपामि)

अर्घावली

विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर का अर्घ

जल फल आठों दरब अरघ कर प्रीति धरी है।
गणधर - इन्द्रनिहूँ तैं थुति पूरी न करी है।।
'द्यानत' सेवक जानके (हो) जग तैं लेहु निकार।।
सीमंधर जिन आदि ले बीस विदेह मँझार।।
श्री जिनराज हो भव-तारण तरण जिहाज।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालयों का अर्घ

कृत्या-कृत्रिम-चारु-चैत्य-निलयान्, नित्यं त्रिलोकी-गतान्,
वन्दे भावन-व्यन्तरान् द्युतिवरान्, कल्पामरा-वासगान्।।
सद् - गन्धाक्षत - पुष्प - दाम - चरुकै: सद्दीपधूपै: फलैर्,
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा, दुष्कर्मणां शान्तये।।

सात करोड़ बहत्तर लाख सुभवन जिन पाताल में।
मध्यलोक में चार सौ अट्ठावन, जजों अघमल टाल के।
अब लख चौरासी सहस सन्तानवें, अधिके तेईस रु कहे।
बिन संख ज्योतिष व्यन्तरालय, सब जजों मन वच ठहे।

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनबिम्बेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध परमेष्ठी का अर्घ

गन्धाढ्यं सुपयो मधुव्रत-गणै:, संगं वरं चन्दनं,
पुष्पौघं विमलं सदक्षत-चयं रम्यं, चरुं दीपकम्।
धूपं गन्धयुतं ददामि विविधं श्रेष्ठं फलं लब्धये,
सिद्धानां युगपत्क्रमाय विमलं, सेनोत्तरं वाञ्छितम्।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्ध-चक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय पूजन का अर्घ

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये।
सहज शुद्ध स्वाभाविकता से, निज में निजगुण प्रकट किये।।
यह अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव-शास्त्र-गुरु को ध्याऊँ।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभु के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो! विद्यमानविंशतितीर्थंकरेभ्यो अनन्तानन्त-सिद्ध-परमेष्ठिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय चौबीसी का अर्घ

जल फल आठों शुचिसार ताको अर्घ करों,
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों।
चौबीसों श्री जिनचंद, आनन्दकंद सही,
पद जजत हरत भव फंद, पावत मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त-चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

तीस चौबीसी का अर्घ

द्रव्य आठों जु लीना है, अर्घ कर में नवीना है,
पूजतां पाप छीना है, भानुमल जोर कीना है।
दीप अढ़ाई सरस राजै, क्षेत्र दश ता-विषै छाजै,
सातशत बीस जिनराजे, पूजतां पाप सबै भाजै।।

ॐ ह्रीं पाँच भरत, पाँच ऐरावत इन दस क्षेत्रों में भूत-भविष्यत्-वर्तमान सम्बन्धी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनेन्द्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री आदिनाथ भगवान् का अर्घ

शुचि निर्मल नीरं गन्ध सुअक्षत, पुष्प चरु ले मन हरषाय।
दीप धूप फल अर्घ सु लेकर, नाचत ताल मृदंग बजाय।।
श्री आदिनाथ के चरण कमल पर, बलि–बलि जाऊँ मन वच काय।
हे करुणानिधि! भवदुःख मेटो, यातैं मैं पूजों प्रभु पाय।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान् का अर्घ

जल फल आदि मिलाय गाय गुन, भगत भाव उमगाय।
जजों तुमहिं शिवतियवर जिनवर आवागमन मिटाय।।
मन वच तन त्रयधार देत ही जनम जरामृत जाय।
पूजों भावसों, श्रीपद्मनाथ पदसार, पूजों भावसों।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ भगवान् का अर्घ

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।।
श्रीचंदनाथ दुति चन्द, चरनन चंद लगे,
मन वच तन जजत अमंद, आतमजोति जगे।।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान् का अर्घ

जलफल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अंग नमाई।
शिवपदराज हेत हे श्रीपति! निकट धरों यह लाई।।
वासुपूज्य वसुपूज तनुज पद, वासव सेवत आई।
बालब्रह्मचारी लखि जिनको, शिवतिय सन्मुख धाई।।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ भगवान् का अर्घ

वसुद्रव्य सँवारी, तुम ढिंग धारी, आनन्दकारी दृग–प्यारी।
तुम हो भवतारी, करुणा धारी, यातैं थारी, शरनारी।।
श्री शान्तिजिनेशं, नुतशक्रेशं, वृषचक्रेशं, चक्रेशं।
हनि अरि चक्रेशं, हे गुणधेशं, दयामृतेशं मक्रेशं।।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान् का अर्घ

जलगंध आदि मिलाय आठों दरब अरघ सजों वरों।
पूजों चरनरज भगतिजुत, जातें जगत सागर तरों।।
शिवसाथ करत सनाथ सुव्रतनाथ, मुनि गुनमाल हैं।
तसु चरन आनन्दभरन तारण, तरन विरद विशाल हैं।।
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान् का अर्घ

जल फल आदि साज शुचि लीने, आठों दरब मिलाय।
अष्टम छिति के राज करनकों, जजों अंग वसु नाय।।
मन वच तनतें धार देत ही, सकल कलंक नशाय।
दाता मोक्ष के, श्री नेमिनाथ जिनराय, दाता मोक्ष के।।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान् का अर्घ

नीरगंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिये।
दीप धूप श्रीफलादि अर्घ तैं जजीजिये।।
पार्श्वनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा।
दीजिये निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवान् का अर्घ

जल फल वसु सजि हिमथार, तन मन मोद धरों।
गुण गाऊँ भवदधि तार, पूजत पाप हरों।।
श्री वीर महाअतिवीर सन्मति नायक हो।
जय वर्द्धमान गुणधीर सन्मति दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबलि भगवान् का अर्घ

हूँ शुद्ध निराकुल सिद्धों सम भवलोक हमारा वासा ना।
रिपु रागरु द्वेष लगे पीछे, यातें शिवपद को पाया ना।।
निज के गुण निज में पाने को, प्रभु अर्घ संजोकर लाया हूँ।
हे बाहुबली! तुम चरणों में, सुख सन्मति पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच बालयति तीर्थंकर भगवान् का अर्घ

सजि वसुविधि द्रव्य मनोज्ञ अरघ बनावत हैं।
वसुकर्म अनादि संयोग, ताहि नशावत हैं।।
श्री वासुपूज्य-मलि-नेम, पारस वीर-अति।
नमूँ मन-वच-तन धरि प्रेम पाँचों बालयति।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ

जल फल आठों दरब चढ़ाय 'द्यानत' वरत करों मन लाय।
परमगुरु हो, जय-जय नाथ परम गुरु हो।।
दरश-विशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थंकर पद पाय।
परमगुरु हो, जय-जय नाथ परम गुरु हो।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ

आठ दरबमय अरघ बनाय, 'द्यानत' पूजौं श्रीजिनराय।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।
पाँचों मेरु असी जिनधाम, सब प्रतिमा जी को करूँ प्रणाम।
महासुख होय, देखे नाथ परम सुख होय।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरु-सम्बन्धि अशीति जिन-चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घपद-प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वरद्वीप का अर्घ

यह अरघ कियो निज-हेत, तुमको अरपतु हों।
'द्यानत' कीज्यो शिवखेत, भूमि समरपतु हों।।
नन्दीश्वर श्री जिनधाम, बावन पूज करों।
वसुदिन प्रतिमा अभिराम, आनन्द भाव धरों।।
नन्दीश्वर द्वीप महान चारों दिशि सोहें।
बावन जिनमन्दिर जान सुर-नर-मन मोहें।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरदिक्षु द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाह सों।
भव-आताप निवार, दश-लक्षण पूजों सदा।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ

आठ दरब निरधार, उत्तम सों उत्तम लिये।
जनम रोग निरवार सम्यक् रत्नत्रय भजूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तर्षि का अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना।
फल ललित आठों द्रव्य मिश्रित, अर्घ कीजे पावना।।
मन्वादि चारण-ऋद्धि-धारक, मुनिन की पूजा करूँ।
ता करें पातक हरें सारे, सकल आनंद विस्तरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री मनु-सुरमनु-श्रीनिचय-सर्वसुन्दर-जयवान्-विनयलालस-जयमित्र-सप्तर्षिभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र का अर्घ

जल गंध अक्षत फूल चरु फल, दीप धूपायन धरों।
'द्यानत' करो निरभय जगत सों, जोर कर विनती करों।।
सम्मेदगढ़ गिरनार चंपा पावापुर कैलाश कों।
पूजों सदा चौबीस जिन, निर्वाण भूमि निवास कों।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशतितीर्थंकर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

कुन्दप्रभ कूट (शान्तिनाथ कूट)

शांतिनाथ जिनराज का, कुन्द कूट है जेह।
मन वच तन कर पूजहूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि मुनि 9 कोड़ाकोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनिभ्यो (इस कूट से सिद्ध भये तिनके चरणारविन्द को मेरा मन, वचन, काय से बारम्बार नमस्कार हो) जलादि अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ

जल चन्दन अक्षत फूल चरु, अरु दीप धूप अति फल लावे।
पूजा को ठानत जो तुम जानत, सो नर 'द्यानत' सुख पावै।।
तीर्थंकर की ध्वनि, गणधर ने सुनि, अंग रचे चुनि ज्ञान मई।
सो जिनवर वानी, शिवसुखदानी, त्रिभुवन मानी पूज्य भई।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री विरागसागर जी का अर्घ

शुभ भावों का निर्मल जल है, विनय भाव का है चंदन।
गुरु वंदन ही अक्षत है, भक्ति सुमन का अभिनंदन।।
मन वच तन से आत्म समर्पण, मोह क्षोभ का शमन करूँ।
परम पूज्य आचार्य शिरोमणि, विराग सिंधु जी को नमन करूँ।।

ॐ ह्रूं परम पूज्य शुद्धोपयोगी संत सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विमर्शसागर जी का अर्घ

भावों का अर्घ चढ़ाने गुरु चरणों में आये हैं।
निज अनर्घ पद की चाह लिये झोली फैलाये हैं।
शुभ अर्घ्य चढ़ा जीवन में रत्नत्रय प्रगटायेंगे।
गुर विमर्श के गुणों की मंगल गीता गायेंगे।
गुरु की पूजा रचायेंगे, मंगल गीता गायेंगे।।

ॐ ह्रूं परम पूज्य भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिन्यून नवकोटि मुनिराजों का अर्घ

क्षीण किया इस नश्वर तन को, करके उग्र तपश्चर्या।
दुर्लभ उत्तम धर्मध्यान और, शुक्ल ध्यान को प्राप्त किया।।
रत्नत्रय में रमण करें जो, तपो अंगना करें वरण।
मोक्षमार्ग दर्शायक होवें, वंदनीय साधु भगवन्।।

ॐ ह्रः त्रिन्यून नवकोटि मुनिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमर्श वन्दना

गुरुवर विमर्श आपकी चर्या महान है ।
निर्ग्रंथता को आपपे गुरुवर गुमान है ।
जिनवाणी माँ के सूत्र सदा मुख से निकलते ।
सुनने को भव्य जीव पपीहे से मचलते ।

व्यवहार गुप्ती पालते निश्चय का लक्ष्य कर ।
शुद्धात्म विचरते हो गुरुवर सुलक्ष्य कर ।
पंचमगति के हेतु पंचाचार पालते ।
निज आत्म में निरत हो शुभाशुभ को टालते ।

आवस्यकों का कर रहे त्रय योग से पालन ।
दसधर्म का झलकता है चर्या में सुपालन ।
द्वादश तपों की अग्नि में नित कर्म जलाते ।
खुद चलते मोक्षमार्ग पे भव्यों को चलाते ।

वाईस परिषहों में परखते निजात्म बल ।
शुद्धात्मानुभूति का चखते हो मिष्ठ फल ।
पाँचों समितियाँ पालते प्रमाद टालकर ।
निज गुण विकाश कर रहे गुरुवर सम्हालकर ।

नित ज्ञान ध्यान में सदा अविराम साधना ।
निज मूलगुणों की किया करते सुपालना ।
तुम द्वादशांग वाणी में खुद को निहारते ।
खुद तिर रहे भव सिन्धु व भव्यों को तारते ।

निज आत्मा के ध्यान बिन न कार्य अन्य है ।
पाके तुम्हें खुद साधना भी धन्य धन्य है ।
आचार्य समन्तभद्र जैसी तर्क शक्तियाँ ।
आचार्य कुन्दकुन्द सी अध्यात्म रश्मियाँ ।

चर्या में मूलाचार को साकार किया है ।
परिणति में समयसार को उतार लिया है ।
जीवन्त कर दिखाया जिनागम को आपने ।
सब त्याग दिया पर के समागम को आपने ।

सब त्याग के अम्बर हुये हो आप दिगम्बर ।
चरणों में नमन करते धरा और ये अम्बर ।
तप त्याग साधना में गुरुवर प्रकर्ष हो ।
इस दुनिया से न्यारे मेरे गुरुवर विमर्श हो ।

गुरु विमर्श का कर रहे कर निर्मल चित् ध्यान ।
श्री चरणों यह भावना बनूँ में आप समान ।

आचार्य विमर्शसागर पूजा

हे निस्पृह योगी चिदानंद रस का रसपान किया करते ।
चैतन्य चमत्कारी निधियाँ जग को तुम नित्यादिया करते ।
शुद्धोपयोग के आलम्बन में ही दिन रात बिताते हो ।
दुखिया जीवों का दुःख हरने शुभ उपयोगी बन जाते हो ।
शुद्धात्म तत्व ही एक सार, यह बात हृदय में समाई है ।
चैतन्य सुरभि से सुरभित जो, आतम की कली खिलाई है ।
निर्दोष श्रमण चर्या पालन, लख जिन आगम का दर्श मिले ।
इस विषम काल में धन्य हैं हम जो ऐसे गुरु विमर्श मिले ।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद्गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्र अत्रावतरावतर संवौषट्

अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
अत्र मम् सन्निहतो भव भव वषट् सन्निधिकरणं ।
(परिपुष्पांजलिं क्षिपामः)

निज निर्मल ज्ञान सुधारस से भव्यों की प्यास बुझाते हो ।
आरोग्य धाम निज आतम की चर्या से याद दिलाते हो ।
निज को पर्याय ही जान जान मैं जन्म मरण करता माया ।
निज पर्यायी का बोध हुआ, अब निर्मल जल चरणों लाया ।

ॐ हूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जग के सारे शीतल पदार्थ कुछ क्षण शीतलता देते हैं ।
पर गुरु मुख से जो वचन झरें भवताप स्वतः हर लेते हैं ।
निज स्वातम अनुभव का स्वामिन जो शीतल चंदन पाया है ।
तुम सी शीतलता पाने ये सन्तप्त हृदय अकुलाया है ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीद्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामिति स्वाहा ।

भव भव से इस झूठे जग की ख्याति को ही अच्छा माना ।
निज आत्मख्याति के वैभव को गुरुवर न मैंने पहिचाना ।
निज आत्म रमणता का पौरुष पद व ख्याति की चाह नहीं ।
हे विभो आपको लख स्वातम पद बिन न कोई चाह रही ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामिति स्वाहा ।

निष्काम स्वानुभव सुमनों से महका आतम का हर कोना ।
जो एक बार लखले इनको बस चाहे इन जैसा होना ।
निज ब्रह्म रमणता का चर्या हर पल जय घोष किया करती ।
ये वीतराग निर्ग्रंथ दशा निज ब्रह्म की याद दिया करती ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

निज ध्यान अग्नि में नित आतम अनुभव पकवान पकाते हो ।
निज चिदानंद चैतन्य रसों में उनको नित्य पगाते हो ।
अध्यात्म रसों से जो पूरित भावों के व्यंजन लाया हूँ ।
जो भव भव में दुःख देती है, वह क्षुधा नशाने आया हूँ ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इस मोह महातम की काली छाया का जोर रहा अब तक ।
सम्यकदर्शन से दूर दूर मिथ्यातय ठौर रहा अब तक ।
सम्यक्त्व से भालोकित श्रद्धा का अनुपम दीप प्रकाशित हो ।
ये दीप समर्पित चरणों में मम् आतम भी अनुशासित हो ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्धात्म साधना महायज्ञ में कर्म जलाया करते हो ।
शुभ और अशुभ से आप दूर शुद्धोपयोग आचरते हो ।
इन द्रव्य भाव नो कर्मों को गुरुवर मैंने अपना माना ।
अव नाश करूँ इन कर्मों का मिल जाये सिद्धों सा बाना ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुभ और अशुभ के फल सुख दु:ख उनमें ही मैं बहता आया ।
भव दु:ख की असह वेदना को भव भव से मैं सहता आया ।
तेरी समता ने कर्मों के फल में समता सिखलाई है ।
शिवफल सुख रस से भरा हुआ, पाने की आस लगाई है ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्धात्म प्रदेशों में रमकर जग को बांटी चेतन मणियाँ ।
निज ज्ञान और श्रद्धान प्रखर टूटी कर्मों की हथकढ़ियाँ ।
खुद मूलाचार स्वयं बनकर चर्या गुरुवर साकार हुआ ।
पर से जितना सिमटे निज में उठना निज का विस्तार हुआ ।
हे नाथ अनर्घ्य स्वभावी हूँ उस अनर्घ्य पद का भान हुआ ।
गुरुवर तुमको जब से पाया, निज का पर का श्रद्धान हुआ ।
कलिकाल भी मानो धन्य हुआ जो ऐसे पावन संत मिले ।
गुरुवर विमर्श को पाकर के लगता जैसे अर्हंत मिले ।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बारह विधि तप, धर्म दस, त्रय गुप्ती में लीन ।
षट् आवस्यक पालते, पंचाचार प्रवीण ।

(इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

प्रथम वलय

त्रय गुप्ति अर्घ्य

मनोगुप्ति अर्घ्य

अशुभ टालकर मन को गुरुवर शुभ में सदा लगाते हैं ।
निश्चय का नित लक्ष्य वर्तता, शुभ तज शुद्ध को ध्याते हैं ।
इस प्रकार व्यवहार और निश्चय मन गुप्ति धरते हैं ।
गुरुवर विमर्श स्वीकार करो चरणों में बंदन करते हैं ।

ॐ ह्रूँ मनोगुप्ति गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वचन गुप्ति अर्घ्य

लेश मात्र न अशुभ वचन जो श्री मुख से उच्चरते हैं ।
सत् और असत् वचनों से दूर होकर, शुद्धात्म विचरते हैं ।
इस प्रकार व्यवहार और निश्चय वच गुप्ति धरते हैं ।
सूरी विमर्श चरणों बंदन, करते भव कृन्दन हरते हैं ।

ॐ ह्रूँ वचन गुप्ति गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

काय गुप्ति अर्घ्य

तन की क्रियाओं से गुरुवर हिंसादिक से निवृत्त हुये
काया का कर उत्सर्ग नाथ, निज आतम में प्रवृत्त हुये
इस प्रकार व्यवहार और निश्चय तन गुप्ति धरते हैं ।
सूरि विमर्श चरणों वंदन करते भव कृन्दन हरते हैं ।

ॐ ह्रूँ वचन गुप्ति गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

द्वितीय बलय

पंचाचार अर्घ्य

दर्शनाचार

शंकादिक मल दोष टालकर जो निर्मल श्रद्धान करें ।
नि:शंकित होकर के जो निज आतम अनुसंधान करें ।
निश्चय व व्यवहार शुद्धि से दर्शन के आचारी हैं ।
सूरी विमर्श नित चरण नमूँ जो पंचाचार के धारी हैं ।

ॐ ह्रूँ दर्शनाचार गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानाचार

संशय और विपर्यय बिन जो, निज पर भेद कराता है ।
ऐसा निर्मल ज्ञान गुरुवर के भीतर नजराता है ।
काल विनय आदि अंगों से गुरुवर ज्ञानाचारी है ।
सूरी विमर्श नित चरण नमूँ जो पंचाचार के धारी हैं ।

ॐ ह्रूँ ज्ञानाचार गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चारित्राचार

पाँच महाव्रत धारण करके पूर्ण असंयम त्याग दिया ।
पाँच समिति त्रय गुप्ति के पुष्पों से नित्य पराग लिया ।
तेरह विधि जो कहलाता, वह चरणाचार के धारी हैं ।
सूरी विमर्श नित चरण नमूँ जो पंचाचार के धारी हैं ।

ॐ ह्रूँ चारित्राचार गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तपाचार

अंतर बाहर द्वादश तप की गुरुवर बगिया महकाई है ।
काषायिक परिणति अंतस् तपब, बाह्य से देह कृषाई है ।
इस रूप कहाता तपाचार जिससे चर्या श्रृंगारी है ।
सूरी विमर्श नित चरण नमूँ जो पंचाचार के धारी हैं ।

ॐ ह्रूँ तपाचार गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वीर्याचार

शक्ति के अनुसार तपस्या और त्याग का अनुपालन ।
शुभाचरण में रत रहते नित करते कर्मों का क्षालन ।
वीर्याचार के पालन से जो निज शुद्धात्म बिहारी हैं ।
सूरी विमर्श नित चरण नमूँ जो पंचाचार के धारी हैं ।

ॐ ह्रूँ वीर्याचार गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तृतीय बलय

षट् आवश्यक अर्घ्य

समता आवश्यक

गुरु विमर्श गुणगान बाबा गुरु विमर्श गुणगान ।
देता शिव सोपान बाबा देता शिव सोपान ।।
तीनों कालों में गुरुवर समता आवस्यक पाल रहे ।
वीतराग भावों में रमकर राग द्वेष को टाल रहे ।
धर्मध्यान में चित्त रमावें आर्त रौद्र का नाश करें ।
प्राणीमात्र के लिये गुरुवर समता गुण में वास करें ।
करते आतम ध्यान बाबा, करते आतम ध्यान ।
गुरु विमर्श गुणगान बाबा गुरु विमर्श गुणगान ।।

ॐ ह्रूँ समता आवश्यक गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्तवन आवश्यक

कर विशुद्ध योगों को गुरु अर्हंत स्तवन करते हैं ।
परम विशुद्धि धारण कर सिद्धों का वंदन करते हैं ।
द्रव्य भाव संस्तवन की महिमा से नित कर्म खपाते हैं ।
प्रभु के श्री चरणों में गुरुवर यही भावना भाते हैं ।
बंदन हो स्वीकार बाबा बंदन हो स्वीकार ।
गुरु विमर्श गुणगान बाबा गुरु विमर्श गुणगान ।।

ॐ ह्रूँ स्तवनावश्यक गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वंदना आवश्यक

अरिहंतो की करें वंदना, सिद्धो का सुमिरन करते ।
भूत भविष्यत वर्तमान भगवंतों का वंदन करते ।
चैत्य और चैत्यालय की, गुरु रत्नत्रय के आलय की ।
सदा बंदना करते गुरुवर निज शुद्धात्म शिवालय की ।
दृढ़ आतम श्रद्धान बाबा दृढ़ आतम श्रद्धान ।
गुरु विमर्श गुणगान बाबा गुरु विमर्श गुणगान ।
देता शिव सोपान बाबा देता शिव सोपान ।।

ॐ ह्रूँ वंदनागुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रतिक्रमण आवश्यक

शुद्धातम का लक्ष्य लिये शुभ मोक्षमार्ग साधन करते ।
गुणस्थान आरोहण कर शुद्धातम आराधन करते ।
चर्या के दोषों की गुरुवर, निंदा गर्हा करते हैं ।
इन दोषों के नाश हेतु नित प्रतिक्रमण उर धरते हैं ।
गुरु हैं चर्यावान बाबा गुरु हैं चर्यावान ।
गुरु विमर्श गुणगान बाबा गुरु विमर्श गुणगान ।
देता शिव सोपान बाबा देता शिव सोपान ।।

ॐ ह्रूँ प्रतिक्रमणावश्यक गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रत्याख्यान आवश्यक

मन वच काया वस में करके गुरुवर प्रत्याख्यान करें ।
रागादि भावों के त्याग से निश्चय प्रत्याख्यान करें ।
कृत कारित व अनुमोदना से चउ विध आहार तजें ।
तपश्चरण की शुद्धि करके गुरुवर निज शुद्धात्म भजें ।
यह तप बड़ा महान बाबा यह तप बड़ा महान ।
गुरु विमर्श गुणगान बाबा गुरु विमर्श गुणगान ।
देता शिव सोपान बाबा देता शिव सोपान ।।

ॐ ह्रूँ प्रत्याख्यानावश्यक गुण सहित आचार्य विमर्श सागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कायोत्सर्ग आवश्यक

तन की ममता टालके गुरुवर निज शुद्धात्म विचरते हैं ।
नाना भेदों वाले गुरुवर कायोत्सर्ग को करते हैं ।
वस्तु स्वरूप जानकर उनके चिन्तन में ही मग्न रहें ।
तन से प्रीति छोड़के गुरुवर आतम में संलग्न रहें ।
कायोत्सर्ग महान बाबा, कायोत्सर्ग महान ।
गुरु विमर्श गुणगान बाबा गुरु विमर्श गुणगान ।
देता शिव सोपान बाबा देता शिव सोपान ।।

ॐ ह्रूँ कायोत्सर्गावश्यक गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

चतुर्थ वलय

दस धर्म अर्घ्य

उत्तम क्षमा धर्म

गुरु विमर्श गुण जो गाये, गुरु विमर्श जैसा बन जाये ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
क्षमा का नीर छलकता जाये, क्रोध कषाय नजर नहि आये
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तमक्षमा गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम मार्दवधर्म

मृदु भावों से शोभित आप, मान कषाय मिटा संताप ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तम मार्दव गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा ।

उत्तम आर्जवधर्म

तीनों योग हैं एक ही रूप, मायामय न दिखे स्वरूप ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तम आर्जव गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम शौचधर्म

लोभ कषाय को गुरुवर नाश, पाया शुचिता का परकाश
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तम शौच गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम सत्यधर्म

सत्य धर्म जब उर में आय, हित मित प्रियवाणी बन जाय
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तम सत्य गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम संयम धर्म

इन्द्रिय प्राणी संयम पूर, सभी असंयम से हैं दूर
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तम संयम गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम तप धर्म

बाह्य अभ्यंतर तप द्वय रूप, पालें गुरुवर धर्म स्वरूप ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तम तप गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम त्याग धर्म

पर द्रव्यों का कर परिहार, उत्तम त्याग धर्म उर धार ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तम त्याग गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम आकिंचन्य धर्म

सर्व परिग्रह का कर त्याग, आकिन्चन्य धर्म सों राग
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तम आकिन्चन्य गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म

ब्रह्मचर्य से कर श्रृंगार, आत्मरमणता का आधार
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2
गुरु विमर्श के गुण जो गाय गुरु विमर्श जैसा बन जाय ।
अमंगल हर, जय गुरुदेवा मंगल कर - 2

ॐ ह्रूँ उत्तम ब्रह्मचर्य गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

पंचम वलय

द्वादश तप अर्घ्य

अनशन तप

निज आतम बल परखा करते, परिषह से गुरुवर न डरते
एक एक उपवास बड़ाकर अनशन तप का पालन करते ।
तन की शक्ति नहीं छिपाते, निज आतम बल को प्रगटाते
गुरु विमर्श चरणों सिर नाये, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ अनशन तप सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊनोदर तप

मुनिवर का आहार प्रमान, वस वत्तीस ग्रास ही जान ।
ऊनोदर तप धारी मुनिवर, रहते अल्पाहारी गुरुवर ।
तन की शक्ति नहीं छिपाते, निज आतम बल को प्रगटाते ।
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ ऊनोदर तप सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृत्ति परिसंख्यान

वृत्ति परिसंख्यान पालते, बहुविध ले संकल्प चालते ।
मिले विधी तो करते भोजन, नहिं मिले तो करते अनशन ।
तन की शक्ति नहीं छिपाते, निज आतम बल को प्रगटाते ।
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ वृत्तिपरिसंख्यान गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

रस परित्याग तप

दूध, दही व घी आदिक रस, अथवा त्यागें गुरुवर षट्रस ।
रस परित्याग को पालें गुरुवर, रस आसक्ति टालें गुरुवर।
तन की शक्ति नहीं छिपाते, निज आतम बल को प्रगटाते ।
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ रस परित्याग गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

काय क्लेश तप

दु:ख से तन को भावित करते, आतापन आदि तप धरते ।
लेशमात्र संक्लेश न करते, काय क्लेश गुरुवर आचरते ।
तन की शक्ति नहीं छिपाते, निज आतम बल को प्रगटाते ।
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ काय क्लेश गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विविक्त शय्यासन

निर्जन बन व भवन में गुरुवर विविक्त शैयासन कर चितधर।
रात के पिछले पहर में जाकर, शयन करे कुछ थोड़ा गुरुवर ।
तन की शक्ति नहीं छिपाते, निज आतम बल को प्रगटाते ।
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ विविक्त शैयासन गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

प्रायश्चित्त तप

अतिक्रम व्यतिक्रम अतिचार से, हुये दोष जो अनाचार से ।
विनय गुरु चरणों करते हैं, प्रायश्चित्त उर में धरते हैं ।
तन की शक्ति नहीं छिपाते प्रायश्चित्त में ध्यान लगाते ।
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ प्रायश्चित्त गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विनय तप

दर्शन आदि पंच विनय जो, मन वच काया नम्र करें जो ।
विनय महातप धारें गुरुवर, अपने कर्म निवारें गुरुवर ।
जिनवाणी माँ व जिनवर की, करते सदा विनय गुरुवर ।
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ विनय गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

वैयावृत्ति तप

रोगी हों या कोई निर्बल, मुनीजनों को देते संबल ।
वैयावृत्ति तप के द्वारा, निज आतम का प्रगटावें बल ।
तन की शक्ति नहीं छिपाते, वैय्यावृत्ति तप अपनाते ।
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ वैय्यावृत्ति गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वाध्याय तप

स्वाध्याय जो पंच प्रकार, गुरुवर करते भली प्रकार ।
उत्तम तप कहलाता है जो, मोह तिमिर विघटाता है जो ।
अवलंबन ले द्रव्यागम का, भेद करें निज, पर आतम का ।
गुरु विमर्श चरणों सिर नाय, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ स्वाध्याय गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

व्युत्सर्ग तप

परिग्रह अंतर बाहर त्यागा, आत्म ध्यान से बस अनुरागा ।
तप व्युत्सर्ग हृदय में धरते, परम समाधि को आचरते ।
अणुमात्र नहिं मेरा जग में, कर श्रद्धान बढ़ें शिवमग में
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ व्युत्सर्ग गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान तप

आर्त रौद्र परित्याग करें जो, धर्म ध्यान अनुराग करें जो ।
धर्म ध्यान की अविरल धारा, शुक्ल ध्यान का लक्ष्य है प्यारा।
तन की शक्ति नहिं छिपते, गुरुवर ध्यान में समय बिताते।
गुरु विमर्श चरणों सिर नायें, द्वादश तप के अर्घ्य चढ़ायें ।

ॐ ह्रूँ ध्यान गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बारह तप दस धर्म पालते, त्रय गुप्ती से अशुभ टालते ।
आवश्यक में लीन सदा जो, पंचाचार प्रवीन सदा जो ।

इत्याशीर्वाद परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

जयमाला

दोहा

चर्या मूलाचार सी, समयसार सा ध्यान ।
हे निर्ग्रंथ महामुनी करो जगत कल्याण ।।

शुद्धातम तो अविनाशी है, ये जनम मरण न करता है ।
पर मातपिता का नाम तो वह, कोरा व्यवहार ही धरता है ।।
बचपन बीता, यौवन आया, सद् गुरुवर का सानिध्य मिला ।
पाकर निमित्त उस उपादान, में श्रद्धा का शुभ पुष्प खिला ।
निज शुद्धातम का ज्ञान हुआ, और स्वपर भेद विज्ञान हुआ ।
शुद्धातम के बिन न कोई, मेरा यह दृढ़ श्रद्धान हुआ ।।
घर द्वार तजा, परिवार तजा, तोड़े सब ममता के बंधन ।
निज आतम से रिस्ता जोड़ा, कर गुरु चरणों का स्पर्शन ।।
पंचाचारों का नित पालन, शुद्धात्मलीन नित श्रमणराज ।
भव्यों को भव से तार रहे बन कर गुरुवर अनुपम जहाज ।।
त्रय गुप्ति को अपनाकर के, अंतर से रिस्ता जोड़ा है ।
मन काय और वचनों का, झूठा वचनालाप भी छोड़ा है ।।
बाहर से पहना महाव्रतों का चोला, अजब निराला है ।
भूले भटके भ्रमते भवि को, शिवमारग देने वाला है ।।
निज आत्म रसिक हे मुक्ति पथिक, निज आतम में रमने वाले ।
स्वामिन ! शुद्धात्म प्रदेशों की, बगिया में ही थमने वाले ।
तुम पाँच इन्द्रियाँ जीत चुके, मनको वश में कर डाला है ।
शुद्धातम का पुरुषार्थ सदा, शुभ अशुभ टालने वाला है ।।
पंचेन्द्रिय विषय न छू पाते, गुरुवर तव चेतन परिणति को ।
हम भी वैसा पुरुषार्थ करें, जो आपसी निर्मल परिणति हो ।।

अध्यात्म सुगंधित उपवन से, निज अनुभव की चुन ली कलियाँ ।
शिवमार्ग चुना है दृढ़ता से सब छोड़ चतुर्गति की गलियाँ ।।
जब जब भी श्रीमुख को खोला, अध्यात्म प्रसून बरसते हैं ।
सुनने को वाणी भव्य जीव, पपीहे की तरह तरसते हैं ।
ये जहाँ जहाँ भी कदम पड़ें, वह माटी, चंदन बन जाती ।
जो भी श्री चरणों को छूले, वह आतम कुंदन बन जाती ।।
श्री चरणों यही प्रार्थना है, हमको भी निज जैसा करलो ।
चैतन्य सुधाकर की लहरों से कर्म कालिमा को हर लो ।।

ॐ ह्रूँ षट्त्रिंशद् गुण सहित आचार्य विमर्शसागर मुनीन्द्राय पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

दोहा

अरिहंतों सा कर रहे, मोक्षमार्ग साकार ।
करुणा सागर आप हो, भव्यों के आधार ।।

(शान्तये शान्तिधारा, पुष्पांजलिं क्षिपाम:)

आचार्य श्री को गवासन से बैठकर (प्रत्यक्ष या परोक्ष) नमोऽस्तु निवेदित करें ।

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज आरती

रचयिता : श्रमण मुनि विचिन्त्यसागर (संघस्थ)

रत्नों का दीपक लाया, भावों का घी भर लाया।
कंचन की थाली गुरुवर आरती,
ओ-गुरुवर हम सब उतारें तेरी आरती,
ओ गुरुवर हम सब उतारें तेरी आरती

ग्राम जतारा जन्म लिया है भगवती हैं माता-2
सनतकुमार के लाल तुम्हें हम-2, झुका रहे माथा।। गुरुवर...
पाँच महाव्रत धारी गुरुवर, परीषह के जेता-2
मुक्ति पथ के तुम ही गुरुवर-2, हो सच्चे नेता।। गुरुवर...
बाल ब्रह्मचारी गुरुवर न झूठा जग भाया-2
गुरु 'विराग' के चरणों आकर-2, संयम अपनाया।। गुरुवर...
धरती अम्बर दशों दिशाएँ वंदन करती हैं-2
सारी सृष्टि गुरु चरणों में-2, अभिनंदन करती है।। गुरुवर...
करुणा सागर गुरु हमारे, चरणों बलि-बलि जायें-2
जबतक मुक्ति मिले न हमको-2, भव-भव तुमको पायें।। गुरुवर...
वीतरागता गुरु की चर्या, से नित झरती है-2
चरणों में नत होके साधना-2 अभिनंदन करती है।। गुरुवर...
छोटे बाबा सिद्धक्षेत्र, अहार के आप कहाते-2
जो भी श्रद्धा से आता है-2 सबके कष्ट मिटाते।। गुरुवर...
अतिशयकारी बाबा हैं ये, जो भी चरणों आते-2
अपने मन की सभी मुरादें-2 वो पूरी कर जाते।। गुरुवर...
शान्तिनाथ प्रभु के लघुनंदन, सुर-नर सब गुण गाते-2
यक्ष-यक्षिणी संग देवगण-2, पूजा नित्य रचाते।। ओ गुरुवर...

भावलिंगी संत श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज चालीसा

रचयिता : श्रमण मुनि विचिन्त्यसागर (संघस्थ)

दोहा

गुरु विरागसागर चरण, वंदन बारम्बार।
सच्ची श्रद्धा भक्ति से, गुरु विमर्श उर धार।।
शब्दों की सुमनावली, चरणों गुरु गुणगान।
चालीसा में कर रहे, गुरु 'विमर्श' यशगान।।

चौपाई

छत्तिस गुण से मंडित गुरुवर, विमर्शसागर सूरी यतिवर।
परम वीतरागी जिनमुद्रा, दर्शन से टूटे चिरनिद्रा।।
मार्ग शीर्ष वदि पंचम आई, गुरुवार का दिन सुखदाई।
पन्द्रह ग्यारह सन् तेहत्तर, जन्मे गुरु बुन्देली भू पर।।
नगर जतारा बजी बधाई, लखकर माँ भगवती मुस्काई।
पुत्र रतन तुमसा जब पाया, पिता सनत का मन हर्षाया।।
गौर वर्ण मूरत मनहारी, लगा मुक्ति वधु हुई तुम्हारी।
लेकिन जब तरुणाई आई, राग रंग परिणति मन भाई।।
गुरु विराग का संघ मनोहर, हो जैसे अध्यात्म धरोहर।
नगर जतारा दर्शन पाया, मन ही मन वैराग्य जगाया।।
फरवरि सत्ताइस पिचानवे, सिद्धक्षेत्र अहार जानवे।
शांतिनाथ की मूरत प्यारी, गुरुवर बने बाल ब्रह्मचारी।।
तेइस फरवरि छियानिव आया, श्री गुरु से ऐलक पद पाया।
पूर्व नाम राकेश तुम्हारा, गूँजा अब 'विमर्श' जयकारा।।
गुरु विराग दें शिक्षा-दीक्षा, पूर्व कर्म ले रहे परीक्षा।
अंतराय परीषह बन आये, 'अंतराय सागर' कहलाये।।

चतुर्मास सत्तानिव आया, भिण्ड नगर में उत्सव छाया।
'जीवन है पानी की बूँद' जब, कालजयी रचना प्रगटी तब।।
गुरुवर महाकवि कहलाये, महाकाव्य पहिचान बताये।
कमर लंगोटी लगती भारी, करली जिनदीक्षा तैयारी।।
पौषवदी एकादश आई, सोमवार मुनि दीक्षा पाई।
चौदह बारह सन् अठानवे, क्षेत्र बरासो भिण्ड जानवे।।
अध्यातम की ज्योति जलाई, समयसार की महिमा गाई।
वाणी सुन सब बने मुमुक्षु, करें प्रार्थना बनने भिक्षु।।
गुरु विराग ने क्षमता जानी, 'सूरीपद' देने की ठानी।
दो हज्जार पाँच सन् आया, गुरु विराग 'सूरीपद' गाया।।
विद्वत् जन आचार्य पुकारें, निस्पृह गुरुवर न स्वीकारें।
मन में था संकल्प निराला, गुरु बिन पद नहीं लेने वाला।।
वह भी शीघ्र घड़ी शुभ आई, गुरु की आज्ञा गुरु ने पाई।
राजस्थान धरा अति पावन, नगर बाँसवाड़ा का आँगन।।
बारह-बारह दो हजार दस, रविवार दिन भक्त कई सहस।
मार्गशीर्ष सुदि सप्तमि उत्सव, सूरीपद का महामहोत्सव।।
गुरु विराग ने 'सूरि' बनाया, जन-जन ने जयकार लगाया।
गुरुवर जिस पथ राह गुजरते, जिनशासन के मेले भरते।।
'योगसार प्राभृत' है नीका, 'विमर्शोदया' प्राकृत टीका।
लिख गुरु ने इतिहास रचाया, जिनश्रुत का सम्मान बढ़ाया।।
क्षेत्र अहार महा सुखदाई, शान्तिभक्ति गुरु सिद्धि पाई।
यक्षों ने तब चँवर ढुराये, गुरुवर के जयकार लगाये।।
संकट मोचन तारण हारे, गुरुमंत्र के अतिशय न्यारे।
जो भी श्रद्धा से ध्याता है, हर दुख संकट खो जाता है।।

आगम अध्यातम का संगम, गुरुचर्या में दिखता हरदम।
शिष्यों को सन्मार्ग दिखाते, अनुशासन का पाठ सिखाते।।
शांत, सहज, अति सरल स्वभावी, हों गुरुवर तीर्थंकर भावी।
जब तक हैं ये चाँद सितारे, चिर आयुष हों गुरु हमारे।।

दोहा

गुरु चालीसा भाव से, पढ़े सुनें चित लाय।
परम यशस्वी हो यहाँ, परभव में यश पाय।।
गुरु भक्ति गुरु प्रार्थना, निश्रेयश सुखदाय।
जनम मरण को नाशकर, नर 'विचिन्त्य' फल पाय।।

(इतिश्री गुरु विमर्श चालीसा)

गुरु मंत्र

संकट मोचन तारण हारे,
गुरु विमर्श की जय जय जय

राष्ट्रीय विमर्श जागृति मंच (रजि.)

के अंतर्गत

जिनागम पंथ ग्रंथमाला

उद्देश्य

मूल जिनागम का संरक्षण, प्रकाशन, प्रचार-प्रसार एवं लोकोपयोगी, धार्मिक-नैतिक साहित्य का निर्माण व प्रकाशन

शुभाशीष/प्रेरणा

प.पू. श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महाराज

स्थापना ग्रंथमाला : 15 नवम्बर 2018, विमर्श उत्सव

कार्यालय : 116, भूता कम्पाउण्ड, इटावा रोड़, भिण्ड (म.प्र.)

भावलिंगी संत
एक नजर...

भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी, आदर्श महाकवि
श्रमणाचार्य श्री 108 विमर्शसागर जी महामुनिराज

आओ परिचय करें गुरुदेव की विचार वीथियों में सजे चिन्तन के ओजदार मोतियों से...

- परम पूज्य भावलिंगी संत, राष्ट्रयोगी श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर जी महामुनिराज एक ऐसे दिगम्बराचार्य हैं जिन्होंने पंथवाद के नाम पर बिखरती जैन समाज में अनादि-अनिधन 'जिनागम पंथ' का उद्घोष कर सामाजिक एकता का सूत्रपात किया है।
- जिनको सिद्धक्षेत्र अहारजी में अपनी निर्मल साधना से पंचमकाल में दुर्लभतम, शान्तिभक्ति की महान् सिद्धि प्राप्त हुई, यक्षों द्वारा की गई महापूजा, और नाम दिया 'भावलिंगी संत' एवं 'अहारजी के छोटे बाबा'।
- आचार्य भगवन् अमितगति स्वामी के 1000 वर्ष प्राचीन ग्रंथ ''श्री योगसार प्राभृत'' ग्रन्थ पर पूज्य गुरुदेव द्वारा प्राकृत भाषा में 'अप्पोदया'/'विमर्शोदया' नामक वृहद टीका का सृजन किया गया है जो अपने आप में अनूठा इतिहास है।
- धर्म निरपेक्ष रूप से सम्पूर्ण भारत वर्ष में गुनगुनाई जाने वाली कालजयी रचना 'जीवन है पानी की बूँद' महाकाव्य के पूज्यश्री मूल रचनाकार हैं। इस कृति में गुरुदेव द्वारा अभी तक 5000 से अधिक छंदों का सृजन किया गया है। गुरुदेव की इस कृति पर अनेक साधु-साध्वियों द्वारा नये-नये छंद जोड़े गये।
- परम पूज्य भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्शसागर जी ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिनकी रचना 'देश और धर्म के लिये जियो' को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कक्षा 11 की हिन्दी सामान्य की पुस्तक 'मकरंद' में प्रकाशित किया गयाहै।
- परम पूज्य भावलिंगी संत ऐसे प्रथम जैनाचार्य हैं जिन्होंने मौलिक रूप से पूर्णत: नवीन 'विमर्श एम्बिशा' भाषा का सृजन कर समस्त भाषा मनीषियों को प्रभावित किया है।
- परम पूज्य गुरुदेव ऐसे प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिन्होंने मौलिक रूप से 'विमर्श लिपि' का सृजन किया है।
- देश की राष्ट्रवादी संस्था 'भारत विकास परिषद्' शाखा बिजयनगर (राज.) द्वारा गुरुदेव को 'राष्ट्रयोगी' अलंकरण से अलंकृत किया गया।

वर्तमान श्रमण संस्था में पूज्य गुरुदेव के संघ का अनुशासन प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है।

website : www.bhavlingisant.com
youtube : Jinagam Panth Jain Channle

जिनागम पंथ, प्रकाशन

...शास्त्र विक्रय... ज्ञानावरणस्यास्रवा:
शास्त्र विक्रय ज्ञानावरण कर्म के आस्रव का कारण है।
(आचार्य अकलंक देव, राजवार्तिक)

NOT FOR SALE